Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष-39 अंक-26
कल्पादि सम्वत् 1972949115

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 16 सितम्बर से 22 सितम्बर 2015 तक
भाद्रपद शुक्ल तृतीया से भाद्रपद शुक्ल नवमी सम्वत् 2072 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

गुलाम कश्मीर की घर.... पृष्ठ- 3

अच्छी चिकित्सा... पृष्ठ- 4

इस जगत में जल... पृष्ठ- 5

COAL BLOCK AND..... पृष्ठ- 8

नहीं सुनते किसी... पृष्ठ- 12

- भारतीय भाषाएँ और छात्रों के मानवीय अधिकारों का प्रश्न
- आतंकियों से निबटने में न हो राजनीति
- क्या धर्मांतरण पर सरकार पाबंदी लगा पाएगी?
- हिन्दू है तो भारत है
- कायर पाकिस्तान

भारत की यात्रा करेंगे श्रीलंका के पीएम

भारतीय मछुआरों की समस्याओं का समाधान हो–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे पदभार संभालने के बाद अपने पहले विदेश दौरे के तहत अगले सप्ताह भारत जाएंगे और इस दौरान वह संवेदनशील मछुआरों के मुद्दों और व्यापक आर्थिक समझौता सहित कई मुद्दों पर भारतीय नेतृत्व के साथ विस्तृत चर्चा करेंगे। १४ से १६ सितंबर तक होने वाली अपनी तीन दिवसीय यात्रा के दौरान वह विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से वार्ता करेंगे और इसके अलावा वह राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी से भी मुलाकात करेंगे। यह यात्रा इस लिहाज से भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना शेष पृष्ठ 11 पर

पाकिस्तान ने एक बार फिर दी भारत को धमकी

गुलाम कश्मीर को भारत में शामिल करने की प्रक्रिया शीध्र शुरु हो–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

पाकिस्तान ने एक बार फिर भारत को युद्ध के नतीजे भुगत लेने की धमकी दी है। पाकिस्तान के रेल मंत्री ख्वाजा साद रफीक ने कहा है कि भारत युद्ध के लिए धकेल रहा है। रफीक ने कहा कि भारत को इसके नतीजे भुगतने होंगे। गौर हो कि कुछ दिनों पहले पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने इसी तरह का बयान दिया था।

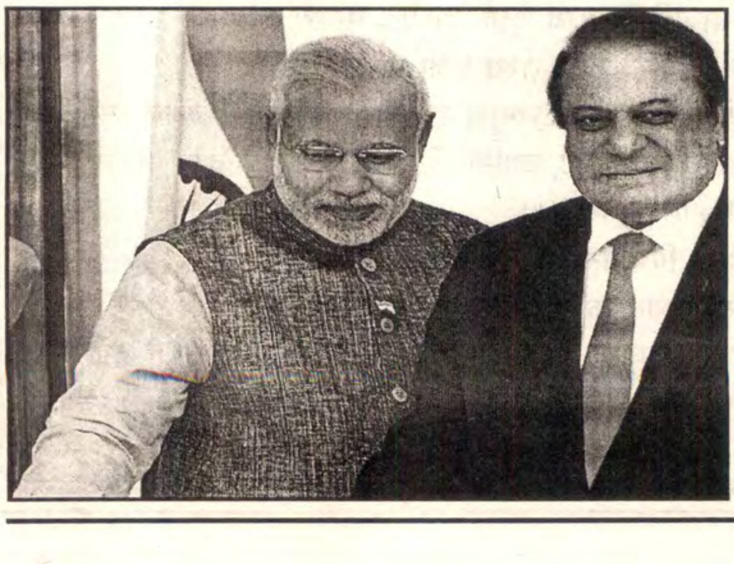

आसिफ ने कहा था कि उनका देश छोटे अथवा बड़े युद्ध के लिए तैयार है। भारतीय नेतृत्व के युद्धोन्माद में आने की स्थिति में वह भारत को बहुत क्षति पहुंचाएगा। उनका यह बयान सेना प्रमुख जनरल दलबीर सिंह सुहाग के उस बयान के बाद आया है कि भारत भविष्य में त्वरित और छोटी लड़ाई के लिए तैयार है। रेडियो पाकिस्तान के एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए आसिफ ने कहा कि पाकिस्तान अमन में यकीन करता है, लेकिन किसी भी आक्रमण का कैसे जवाब देना है। यह भी जानता है। उन्होंने कहा हम शांति चाहते हैं, लेकिन अगर भारत के नेतृत्व पर युद्ध का उन्माद छाता है तो हम भारत को बहुत अधिक क्षति पहुंचाएंगे। थल सेना अध्यक्ष जनरल दलबीर सिंह सुहाग ने कुछ दिनों पहले कहा था हम जानते हैं कि भविष्य में होने वाले छोटे युद्ध की चेतावनी के लिए सीमित समय होगा। ऐसे में ऑपरेशनल तैयारियों को हर समय उच्च स्तर पर रखना जरूरी है। यह हमारी रणनीति के लिए अहम हो गया है। सेना प्रमुख ने यह भी कहा कि पाकिस्तान की ओर से किए जा रहे संघर्ष विराम के उल्लंघन की संख्याओं में हो रहे इजाफे को देखते हुए सेना पहले से अधिक सतर्क हो गई है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा, एवं शेष पृष्ठ 10 पर

श्रीमद्भगवदगीता और मानस में धर्म

गीता सन्देश आत्मा अजर है, अनश्वर है, अकाट्य है, अमर है और मानव मात्र के ५ विकारों लोभ, मोह, क्रोध, काम, अहंकार का विनाश करना है। कर्म ही योग है गीता की परिणति धर्म शब्द से की गई है और इति भी धर्म मम शब्द से हुई है। आनन्दकन्द भगवान श्रीकृष्ण ने मोहजनित संभ्रान्त अर्जुन को 'कर्तव्य धर्म' पालन की प्रेरणा गीता के १८ अध्यायों योग ६, वर्णित ६ योगों को साधन मानकर 'गीता धर्म' की दार्शनिकता १८वें अध्याय के ७२वें श्लोक में योग ६ में अनश्वर अंक को अमरत्व को प्रदान कर मानवमात्र को प्रतिदिन गीता धर्म को दृढ़ विश्वास और अनुराग के साथ मानने का मसौदा प्रदान किया है। विभिन्न विद्वानों ने **'धर्मक्षेत्रो कुरुक्षेत्रो'** का अर्थ मानव शरीर को धर्म क्षेत्र मानकर कर्तव्य परायण बनाने की चेतना प्रदान की है। विश्वभर में २०७ देश हैं **और ३६ मुख्य धर्म हैं।** भाग्यवश योग ६ ही है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने मंगलाचरण के ७ श्लोकों को ५ सोरठों और १८ चौपाइयों के बाद 'प्रयागराज' की महिमा का गान करते हुए धर्म शब्द का प्रथम प्रयोग किया है।

बटु विश्वास अचल निज धरमा। तीरथ राज समाज सुकरमा।।

एक साक्षी इतिहास प्रसिद्ध है इस धरती पर ३ नेत्र हैं। कटासराज, पुष्करराज, प्रयागराज। कटासराज कीटाक्षराज का अपभ्रंश है। सती के देहान्त के समय भगवान शिव के नेत्रों से दो अश्रु गिरे जिनसे एक कटासराज (पाकिस्तान) और दूसरा पुष्करराज। दोनों स्थानों पर दो सरोवर हैं। कटासराज सरोवर पर ही यक्ष के प्रश्नों के उत्तर न देकर चार पाण्डव पुत्र मारे गए थे। जिन्हें धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने उत्तर देकर प्राण वापिस लिये थे। धरती के इन तीन नेत्रों का स्नान सनातन धर्मी के लिये उतना ही अनिवार्य है जितना मुसलमान बन्धुओं के लिये हज करना। अकिंचन इन तीनों सरोवरों का स्नान कर चुका है। **'होई सो जो राम रचि राखा'।** गीता में तो धर्म शब्द का प्रयोग २७ बार भगवान की वाणी से निकला है। गोस्वामी जी ने मानस में धर्म शब्द का अनगिनत बार प्रयोग किया है। हर अवस्था में धर्म का अध्ययन और भूमिका यथावत अलग–अलग से की गई है पर एक निष्कर्ष तो सुगमतापूर्वक निकाला जा सकता है कि महात्मा तुलसीदास जी ने धर्म शब्द को 'भक्तिस्वरूप' प्रदान किया है। राम में अपनी अनन्य आस्था को ही दर्शाया है, यही मानस धर्म है।

सियाराम मय सब जग जानी। करहुं प्रनाम जोरि जुग प्रानि।

भगवान राम को हाथ जोड़कर ह्रदयांगम करना ही तुलसीदास जी का निर्विवादित धर्म है। धर्म अक्षर की व्यापकता और सार्थक प्रयोग मानस में महाकवि ने आस्था, आवश्यकता, अवस्था और आश्वासन के साथ ही किया है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को कर्तव्य परायण बनाने के लिये प्रेरणा स्वरूप अपने उपवाचों में धर्म शब्द का प्रयोग किया है पर मानस कर्ता ने मानव मात्र में रामभक्ति को उद्वेलित करने के लिये धर्म को आस्था, श्रद्धा, विश्वास, मनन, जप, तप, योग तथा प्रेमाभक्ति के लिये ही किया है। मानव जीवन में कुछ लोगों को जीवन यापन के लिये भी धर्म की आवश्यकता और सम्बल पर विशेष बल दिया है। मानस के बालकाण्ड में ३१वें दोहे के बाद इस चौपाई में धर्म शब्द का प्रयोग किया है कि–

जग मंगल गुन ग्राम राम के। दानि मुवुफति धन धरम धम के।।

श्रीराम जी के स्वरूप, गुणों के समूह जगत के मंगल स्वरूप हैं। मुमुक्षुओं को मोक्ष, अर्थार्थियों को धन, जिज्ञासुओं को धर्म तथा आर्त व्यक्तियों को आश्रय देने वाले हैं। यहाँ यह कह देना अतिश्योक्ति न होगी कि मानस में धर्म जिज्ञासुओं का स्वरूप है। इसके आगे चौपाई में गोस्वामी जी ने कहा है कि–

जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल व्रत धरम नेम के।

श्रीराम जी के जन्मदाता राजा दशरथ तथा माता कौशल्या जी सीता राम प्रेम के भी जन्मदाता हैं। श्रीरामचरित सम्पूर्ण व्रतों, धर्मों, नियमों के बीज अर्थात् कारण में हैं। मैंने अपनी सुपुत्री को विवाहोपरान्त बिदाई में मानस वर्णित यह चौपाई भेंट की थी–

सादर सास ससुर पद पूजा, या सम नारी धर्म नहिं दूजा।

गोस्वामी जी की भक्ति का द्योतक धर्म है और गीता धर्म भगवान श्रीकृष्ण जी का सन्देश, आदेश, निर्देश है। इसका पालन हो, मानव धर्म राष्ट्र धर्म है। **प्रो. बलदेवराज भण्डूला**

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह आर्थिक परिपेक्ष्य में किये गये कार्यों में बधायें समाप्त होकर सफलता मिलने के आसार नजर आ रहे हैं। ऑफिस के कार्यों में लोग आपका विरोध करेंगे किन्तु आपको सिर्फ रक्षात्मक रवैया ही अपनाना है। मानसिक तनाव में कुछ कमी आयेगी जिससे नये कार्यों में मन लगेगा।

वृष - इस सप्ताह परिस्थितियां प्रतिकूल रह सकती हैं, किन्तु समय आपके अनुकूल रहेगा। कुछ कार्यों के पूर्ण होने से सार्थक परिणाम सामने आयेंगे। आर्थिक स्थितियों में पहले की अपेक्षा मजबूती आयेगी। कुछ भौतिक वस्तुओं की खरीद्दारी होने के आसार नजर आ रहे हैं।

मिथुन - आपकी सफलता का काफी हद तक दारोमदार आपके दृष्टिकोण, सोच और कार्यशैली पर निर्भर है। किसी भी समस्या को हल करने के लिए मन को केन्द्रित करना बेहद जरूरी है। कालान्तर में किये कार्यों का अफसोस न करके बल्कि वर्तमान के कार्यों को मेहनत और सलीके से करना उचित रहेगा।

कर्क - इस सप्ताह आप–अपने कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित जानकारियों को बढ़ाने का अधिकाधिक कोशिश करें। यहीं नहीं उपलब्ध सूचनाओं को कन्फर्म करना भी जरूरी है। प्रतियोगिता में सबसे अहम बात है, अपने–आपको ठीक से समझकर एवं पूरी उर्जा से सत्त प्रयास करना। पारिवारिक रिश्तों को बखूबी निभाने के लिए कुछ तो त्याग करना ही पड़ेगा।

सिंह - जीवन एक सुख व दुःख का मिश्रण है जिसमें सुख कम और दुःख अधिक। आपके दुःख व तनाव का मुख्य कारण सिर्फ अनिर्णय की स्थिति है, और कुछ नहीं। यह समय आक्रमण करने का नहीं, बल्कि स्वयं को उर्जावान व सक्षम बनाने का है।

कन्या - साहस और धैर्य हर सफलता का एक बेहतर सूत्र है। सफल होने के लिए कुछ अलग करने की जरूरत नहीं है, बस काम के प्रति समर्पण और लग्न होनी चाहिए। जब किसी चीज की भरमार होती है, तो व्यक्ति अक्सर भ्रमित होता है।

तुला - जरूरी नहीं कि आप वही काम करें जो सब कर रहें हैं बल्कि आप वो करें जिसे करने में आपको आनन्द की अनुभूति हो। आपके व्यक्तित्व के लोग कायल रहेंगे क्योंकि आप में जो बात है, वह हर किसी में कहां आ पाती है। इसलिए अपनी उपयोगिता बनायें रखें इसी में आप का हित होगा।

वृश्चिक - आप जो सोचेंगे उसका असर आपके काम पर दिखेगा। इसलिए सकारात्मक सोचें जिससे आप ऊर्जावान बनेंगे और सफल भी होंगे। कुछ लोग पुरानी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करेंगे, परन्तु अपने ही टांग अड़ायेंगे। अनावश्यक वस्तुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित न करें।

धनु - इस सप्ताह आप किसी गुप्त योजनाओं पर धन का व्यय करेंगे जिसके दूरगामी परिणाम लाभकारी प्रतीत हो सकते हैं। कलात्मक कार्यों के प्रति विशेष रूचि बनी रहेगी। पारिवारिक रिश्तों में नजदीकियां बढ़ने से मन आशान्वित होगा। धन का व्यय बढ़ सकता है।

मकर - समय का जितना बेहतर तरीके से आप उपयोग करेंगे उतनी ही तेजी से आपका विकास होगा। वक्त के साथ जीवनशैली बहुत तेज बदल रही है, इसे थोड़ा सा नियन्त्रित करने की जरूरत है। आपके संयुक्त परिवार में विखंडन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

कुम्भ - इस सप्ताह पारिवारिक गतिविधियों में सक्रिय रहने की जरूरत है। बच्चें बड़ो को देखकर ही सीखते हैं, इसलिए आप कोई ऐसी हरकत न करें जिससे कि बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़े। समय और सम्बन्ध दोनों के प्रतिबद्धता अपनाना आपके लिए हितकर साबित होगा।

मीन - इस सप्ताह कुछ ऐसे कार्य आपके द्वारा हो सकते हैं, जिन्हें करने के बाद आपको आत्म–ग्लानि होगी। गैर सरकारी संस्थाओं से जुड़े लोग कोई भी नयी योजना बनाने से पूर्व अपने स्वविवेक का इस्तेमाल अवश्य करें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चित्तः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।।

हे अर्जुनः आसक्ति का नाश न होने के कारण ये प्रमथन स्वभाव वाली इन्द्रियाँ यत्न करते हुए बुद्धिमान पुरुष के मन को भी बलात् हर लेती है।।६०।।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।

इसलिये साधक को चाहिये कि वह उन सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके समाहित चित हुआ मेरे परायण होकर ध्यान में बैठे, क्योंकि जिस पुरुष की इन्द्रियाँ वश में होती हैं, उसी कि बुद्धि स्थिर में होती है।।६१।।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।।६२।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 16 सितम्बर से 22 सितम्बर 2015 तक

अध्यक्षीय

गुलाम कश्मीर की घर वापसी करे सरकार

हालिया दिनों में भारत पाकिस्तान विवाद पर जमकर बयानबाजी हो रही है। चाहे पाकिस्तान के राजनेता हों, सेनाधिकारी हों या फिर इससे सम्बंधित अन्य लोग, भारत को धमकाने में कसर नहीं छोड़ रहे हैं। इसके साथ साथ पाकिस्तान का कश्मीर मुद्दा उठाया जाना भी कोई नई बात नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ से लेकर तमाम अन्य देशों के साथ वह अपना बेसुरा राग अलापता रहता है। समस्या यह है कि इन परिस्थितियों में भारत की केंद्र सरकार को क्या कदम उठाने चाहिए, जिससे न केवल यह समस्या सुलझे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के गले से यह काँटा निकले। इस सन्दर्भ में पाकिस्तान समेत सभी लोगों के लिए यह संदेश देना जरूरी हो गया है कि जम्मू कश्मीर का भारत में विलय अंतिम है। हिन्दू महासभा के नेता रहे श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने एक ध्वज, एक निशान के लिया अपने प्राण त्याग दिए हैं तो ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह साफ है कि तत्कालीन कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने स्वेच्छा से अपना विलय भारत के साथ निश्चित कर दिया था। यह बात आम, खास सबको ही पता है। हमारे भारतीय रणनीतिकारों को इसके बीच से अपनी बात ढूंढने की आवश्यकता है कि अगर भारत के साथ जम्मू कश्मीर का पूर्ण और अंतिम विलय हो चुका है तो पाकिस्तान के पास जम्मू कश्मीर का हिस्सा कैसे है? साफ है कि पाकिस्तान ने भारत की भूमि कब्जा रखी है और इस पर हमारी चुप्पी उसका हौंसला बढ़ाने का कार्य कर रही है। पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल राहिल शरीफ द्वारा कश्मीर को अधूरा एजेंडा बताए जाने के जवाब में भारत से प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह के बयान की तारीफ की जानी चाहिए, जिसमें उन्होंने दो–टूक शब्दों में कहा कि जम्मू–कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। यदि इससे जुड़ा कोई मुद्दा है, तो वह यह कि गुलाम कश्मीर को किस तरह फिर से भारत में शामिल किया जाए। उन्होंने पड़ोसी देश को यह भी याद दिलाया कि पिछले ६७ सालों से उसने इस पर अवैध कब्जा कर रखा है। हिन्दू महासभा केंद्र सरकार के साथ पूरे समर्थन लेकर खड़ी होगी, बल्कि समूचा देश खड़ा होगा अगर मोदीजी अपने राजयमंत्री के दिए गए बयान के अजेंडे को आगे लेकर बढ़ते हैं। इस बात को जोर देता है हाल ही में हुआ एक सर्वे, जिसमें दावा किया गया है कि पाकिस्तान द्वारा कब्जा किए गए कश्मीर की जनता भारत में शामिल होना चाहती है, क्योंकि वहां के नागरिकों का जीवन–स्तर बद से बदतर होता जा रहा है। वहां के नागरिकों के बच्चे न तो पढ़ पाते हैं और न ही वहां के युवकों को रोजगार हासिल है। हाँ! इस भाग के युवकों का पाकिस्तान आतंकी बनाकर अवश्य ही प्रयोग करता है। इस सर्वे से साफ हो गया है कि पाकिस्तान द्वारा कब्जा किये गए कश्मीर के लोग इस आतंकी राष्ट्र की हकीकत समझ चुके हैं और अब भारत में शामिल होना चाहते हैं। हिन्दू महासभा इन कश्मीरियों के घर वापसी की मांग करती है। यदि इस काम में पाकिस्तानी फौज टांग अडाती है तो फिर उससे भारत को बेहिचक निपटना चाहिए, क्योंकि काल करे सो आज कर! आखिर, पाकिस्तान युद्ध की ही भाषा समझता है तो इससे हम बचने की कोशिश कब तक करेंगे? भारत के सेना प्रमुख दलबीर सुहाग के बयान की हिन्दू महासभा समर्थन करती है कि भारत को हर वक्त चौकस और सजग रहना चाहिए, क्योंकि आने वाले समय में छोटे और संक्षिप्त युद्धों की सम्भावना बन रही है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

कायर पाकिस्तान

पाकिस्तान का रवैया हमेशा से छिप कर वार करने का रहा है। शांति की आड़ में उसने हमेशा अशांति ही फैलाई है। भारत ने हमेशा यह प्रयास किया है कि पड़ोसियों से हमारे संबंध अच्छे रहे हैं, लेकिन पाकिस्तान को हर बार हार का स्वाद चखने का आदत सी पड़ गयी है। इसी के चलते एक बार फिर वह अपनी क्षमता से ज्यादा बोलने लगा है। शांति की गाड़ी पटरी से उतारने के बाद पाकिस्तान की तरफ से वे सारी हरकतें तेज हो चली हैं, जो उसने भारत से हुई चार जंगों की पूर्व पीठिका तैयार करने के लिए की थी। लिहाजा सीमा पर फायरिंग की आवाजें तेज हुई हैं। घुसपैठ की गति जोर पकड़ी है। उफा के बाद पंजाब के गुरदासपुर में हुए आतंकी हमले और कश्मीर की दो घुसपैठों में पकड़े गए आतंकी पाकिस्तान की मंशा को स्पष्ट करते हैं। कहते हैं कि अपनी कमजोरी छुपानी हो तो दुनिया का ध्यान भटका दो। पाकिस्तान भी इसी नीति पर चलता दिखाई दे रहा है। अमन–चैन की जगह दोनों पक्षों द्वारा जंग और उसकी तैयारी की बातें की जा रही हैं। पाकिस्तानी रक्षा मंत्री धमकी देते हैं कि अगर भारत उस पर युद्ध थोपता है तो भारत को इसका खामियाजा दशकों तक भुगतना होगा। भारत के सेनाध्यक्ष ने भी छोटी जंग के लिए तैयार रहने की बात कही है। युद्ध के नफा–नुकसान पाकिस्तान से बेहतर भला दूसरा कोई शायद ही जानता हो। भारत से चार युद्ध में शिकस्त खा चुका है। इसमें जान–माल के नुकसान से भी वह वाकिफ है, लेकिन शायद वह शेखी बघारने और परिणाम से बेपरवाह दिखने की फितरत से ग्रस्त है। दोनों पक्ष यह बखूबी जानते हैं कि अमन–चैन का रास्ता बातचीत की मेज से ही होकर जाता है। जंग किसी समस्या का निदान नहीं है। पाकिस्तान को कम से कम अपनी जनता की बेहतरी और भलाई की खातिर अपने अहम और क्षुद्र हितों को छोड़कर व्यापक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए था। भारत ने ऐसे कदमों की पूर्व में मिसाल पेश की है, लेकिन हर बार उसे दगा मिली है। पड़ोसी से संबंध बेहतरी के लिए भारत एक तरह से घरेलू और बाहरी मोर्चे पर जंग सरीखे हालत से गुजर रहा है। जनभावना, राजनीतिक दलों और वैश्विक जगत की मंशा के विपरीत जाकर हर बार भारत ने अपनी पाकिस्तानी नीति में लोच दिखाई है। आखिर बड़ा कब तक बड़प्पन दिखाए। ऐसे में भारत के साथ पाकिस्तान की एक कदम आगे और दो कदम पीछे की नीति की पड़ताल आज हम सबके लिए बड़ा मुद्दा है। पाकिस्तान के दुस्साहस की आशंका से कभी इन्कार नहीं किया जा सकता। सीमा पर कुछ ताकतें १९६५ जैसे दुस्साहस की दोबारा कोशिश कर सकती हैं। इसलिए भारत को भी तैयार रहना चाहिए। वास्तव में देखा जाए तो भारत के बढ़ते वैश्विक संप्रभुता से सहमा पाकिस्तान अब कायर हिंसा की राह अपना रहा है। पाकिस्तान भारत की सीमा रेखा पर खड़े भारतीय योद्धा को छल से मारकर भारत की गहरी शांति को झकझोरा है। पाकिस्तान एक असफल देश साबित हुआ है। विश्व समुदाय और अपने लोगों का ध्यान हटाने के लिए उसकी मजबूरी है युद्ध का हौवा खड़ा कर देना। इतिहास गवाह रहा है कि जब–जब हमने पहल की है, वे अपना नापाक चेहरा ही दिखाता रहा है। अब पाक को सबक सिखाने का सही समय आ गया है। पाकिस्तान पूरी तौर पर पस्त है और त्रस्त है। आतंकवादियों की गिरफ्त में है। वैश्विक पटल पर पाक फेल हो चुका है। पूर्व के घटनाक्रमों से हम समझ भी चुके हैं कि पाकिस्तान बातचीत से नहीं मानने वाला है इस बार उसे उसी की भाषा में मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए। साथ ही भारत को पाकिस्तान के साथ किसी भी तरह की बातचीत बंद कर देनी चाहिए।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव
E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

अच्छी चिकित्सा पद्धति कौन सी?

✍ डॉ. चंचलमल चोरडिया

अच्छे स्वास्थ्य हेतु निम्नतम आवश्यकताएँ-

स्वस्थ जीवन जीने के लिए शरीर, मन और आत्मा, तीनों की स्वस्थता आवश्यक होती है। तीनों एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। तीनों के विकारों को दूर कर तथा सन्तुलित रख आपसी तालमेल द्वारा ही स्थायी स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है। अतः स्वास्थ्य की चर्चा करते समय जहाँ एक–तरफ हमें यह समझना आवश्यक है कि शरीर, मन और आत्मा का सम्बन्ध क्या है? किसका कितना महत्त्व है? दूसरी तरफ जीवन की मूलभूत आवश्यक ऊर्जा स्रोतों का सम्यक् उपयोग करना होता है तथा दुरुपयोग अथवा अपव्यय रोकना पड़ता है। स्वास्थ्य के लिए हमारे शरीर में समाधान हैं, प्रकृति में समाधान हैं, वातावरण में समाधान हैं। भोजन, पानी और हवा के सम्यक् उपयोग और विसर्जन में समाधान हैं। समाधान भरे पड़े हैं। परन्तु उस व्यक्ति के लिए कोई समाधान नहीं है, जिसमें अविवेक और अज्ञान भरा पड़ा है।

राहत ही पूर्ण उपचार नहीं होता

आज उपचार के नाम पर रोग के कारणों को दूर करने के बजाय अपने–अपने सिद्धान्तों के आधार पर रोग के लक्षण मिटाने का प्रयास हो रहा है। उपचार में समग्र दृष्टिकोण का अभाव होने से तथा रोग का मूल कारण पता लगाये बिना उपचार किया जा रहा है अर्थात् रोग से राहत ही उपचार का लक्ष्य बनता जा रहा है। भावात्मक एवं मानसिक असंतुलन, तनाव, आवेग जैसे प्रमुख कारण हमारी अन्तःश्रावी ग्रन्थियों को प्रभावित करते हैं। हमारे शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक विकास का ग्रन्थियों से सम्बन्ध होता है। ग्रन्थियों का असन्तुलन हमारे ६० से ७५ प्रतिशत रोगों का मूल कारण होता है, फिर भी आधुनिकता का एवं सम्पूर्ण चिकित्सा का दम्भ भरने वाली उपचार पद्धतियों के पास उसको सन्तुलित रखने का कोई सरल एवं प्रभावशाली उपाय नहीं है। आज राहत को ही प्रभावशाली उपचार समझने की भूल हो रही है। उपचार में दुष्प्रभावों की उपेक्षा हो रही है। ऐसा उपचार दीमक लगी लकड़ी पर रंग–रोगन कर चमकाने के समान होता है तथा हमारी असजगता, अविवेक एवं अज्ञान का परिचायक। रूई में लगी आग को हम कब तक छिपाये रख सकेंगे? आज उपचार के नाम पर मूल में भूल हो रही है। रोगों के कारणों की उपेक्षा कर उन्हें दूर करने के बजाय उन्हें दबाकर तात्कालिक राहत पहुँचायी जाती है। गंदगी को सफाई के नाम पर दबाकर या छिपाकर रखने से हानि ही अधिक होगी। उसमें सड़ान्ध, दुर्गन्धता बढ़ेगी। उसी प्रकार शरीर में रोग को दबाने से वह भविष्य में विकराल रूप धारण करेगा एवं असाध्य बन अधिक परेशानी तथा संकट का कारण बनेगा।

स्वास्थ्य के प्रति हमारी असजगता के परिणाम

आज का मानव कहने को तो अपने आपको सर्वश्रेष्ठ, बुद्धिमान, प्रगतिशील, चिन्तक मानता है परन्तु अधिकांश व्यक्ति स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति इतने उदासीन, उपेक्षित रहते हैं कि उनका स्वास्थ्य भाग्य के भरोसे अथवा चिकित्सकों के हाथों में होता है। आरोग्यता के नियमों का पालन किये बिना, डॉक्टरों के मधुर–मधुर आश्वासनों के सहारे स्वस्थ रहने के प्रयास में वे पूर्ण सुखी नहीं हैं। कुछ रोगों में तो दवाइयाँ उनके जीवन की आवश्यकता बनती जा रही हैं। संक्रामक रोगों में तो रोगी का जीवन दवा के सहारे ही चलने लगता है। इसका प्रमुख कारण रोगी विज्ञापनों, प्रदर्शनों, डॉक्टरों की बड़ी–बड़ी डिग्रियों एवं उनके पास पड़ने वाली भीड़ से भ्रमित हो साधारण से रोगों में डॉक्टरों के सामने अन्ध श्रद्धा के कारण अपना आत्म समर्पण कर अपनी शारीरिक क्षमताओं को तो नष्ट करते ही हैं, तात्कालिक राहत के नाम पर अज्ञानतावश स्वयं पर डॉक्टरों द्वारा किये जा रहे, प्रयोगों एवं दवाओं के दुष्प्रभावों से पूर्ण रुपेण बेखबर हैं। रोगी को तत्काल राहत पहुँचाने का प्रयास, दुःख को भुलाने के लिये शराब के नशे में अपना भान भुलाने के समान ही होता है। यदि आधुनिक उपचार प्रभावशाली होते तो रोगों से तत्काल राहत मिलती और आज अस्पताल खाली रहते?

पशु भले ही बेजुबान हो-बेजान नहीं हैं

किसी भी जीव को स्वस्थ रखने में दिया गया सहयोग उत्कृष्ट सेवा होती है। संवेदना जागे बिना सच्ची सेवा नहीं हो सकती। आधुनिक चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मूक, बेबस, असहाय जीवों पर विभिन्न

प्रकार के प्राणघातक प्रयोग किए जाते हैं। लकड़ी में आग होती है। क्या उसको देखा जा सकता है? ठीक उसी प्रकार जानवरों के विच्छेदन से शरीर के बनावट की जानकारी तो हो सकती है, परन्तु चेतना की उपेक्षा करने वाला ज्ञान कैसे पूर्ण, वास्तविक और सच्चा हो सकता है? दवाइयों के निर्माण हेतु जीवों के अवयवों का बिना किसी परहेज उपयोग होता है। औषधियों के परीक्षण हेतु जीवों को यातनाएँ दी जाती है। उनकी मान्यतानुसार मनुष्य के लिए सभी अपराध क्षमा होते हैं। क्या आपने कभी सोचा आपके दुःख, दर्द,रोग अथवा पीड़ा का क्या कारण है? यह तो आपके ही किए की प्रतिक्रिया है। "क्रिया की प्रतिक्रिया" तो इस सृष्टि का सनातन सिद्धान्त है। हमने अतीत जीवन में या जन्मों में किसी को मारा है, पीटा है, सताया है, रुलाया है, प्रताड़ित किया है, उसी की सजा के रूप में रोग आते हैं। स्पष्ट है रोग का कारण हमारी क्रूरता, कठोरता, कामुकता से जुड़ा हुआ है। मस्तिष्क में अविवेक एवं प्राणिमात्र के प्रति अशुभ चिन्तन सबसे बड़ा ब्रेन हेमरेज है तथा हृदय में दया, करूणा नहीं होना सबसे बड़ी हार्ट ट्रबल है। अपराध करने, करवाने और करने में सहयोग देने वाले प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में अपराधी होते हैं। हिंसा को प्रोत्साहन देने वालों की संवेदना प्रायः प्राणि मात्र के प्रति विकसित नहीं होती। इसी कारण आधुनिक चिकित्सक अपेक्षाकृत कम संवेदनशील होते हैं। रोग का सही निदान न जानने के बावजूद अपनी गलती न स्वीकार कर येन–केन–प्रकारेण रोगों को दबा वाहवाही लूट न केवल अपने अहं का पोशण करते हैं, अपितु रोगी को प्रयोगशाला बना अपना स्वार्थ साधते हैं। अतः दुःख से बचने वालों को अन्य प्राणियों को दुःखी बनाने में प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से सहयोगी नहीं बनना चाहिए। सेवा कर्म निर्जरा का सशक्त माध्यम है और हिंसा कर्म बन्धन का प्रमुख कारण। अतः सेवा के साथ साधन और सामग्री की पवित्रता आवश्यक होती है, उसके अभाव में की गई सेवा घाटे का सौदा है।

अहिंसक साधकों का उपचार के समय दायित्व

आश्चर्य तो इस बात का है कि अधिकांश साधक जो जीवन का मोह छोड़ साधना पथ के पथिक बन कठिन से कठिन परिश्रम सहन करने का संकल्प लेने वाले अज्ञान अथवा अविवेक के कारण साधारण से रोगों से विचलित हो जाते हैं। अपनी सहनशक्ति, धैर्य खो जीवन के मोह का परिचय देने लगते हैं। दवाओं की गवेषणा तक नहीं करते। मानव सेवा के नाम पर हिंसा पर आधारित चिकित्सालयों के निर्माण की प्रेरणा देते अथवा अनुमोदना करते संकोच नहीं करते? हम बूचड़खानों अथवा जीव हिंसा का तो विरोध करें परन्तु उनसे बने उत्पादकों का स्वयं उपयोग करें, दूसरों से करवाएँ तथा उपयोग में लेने वालों को प्रोत्साहन देकर अथवा प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष अनुमोदना कर सहयोग देना कहाँ तक उचित है? जिस पर अहिंसा का पूर्णतया पालन करने वालों को तो विशेष चिन्तन करना चाहिए। अहिंसक विकल्पों को प्राथमिकता देने की मानसिकता बनानी चाहिए।

चिकित्सा हेतु हिंसा अनुचित

किसी प्राणी को दुःख दिये बिना हिंसा, क्रूरता, निर्दयता हो नहीं सकती। जो प्राण हम दे नहीं सकते, उसको लेने का हमें क्या अधिकार? दुःख देने से दुःख ही मिलेगा। प्रकृति के न्याय में देर हो सकती है, अंधेर नहीं। जो हम नहीं बना सकते, उसको स्वार्थवश नष्ट कना बुद्धिमत्ता नहीं। अतः चिकित्सा के नाम पर प्रत्यक्ष– परोक्ष रूप में हिंसा करना, कराना और करने वालों को सहयोग देना अपराध है। जिसका परिणाम हिंसा में सहयोग देने वालों को भविष्य में रोगी बन भुगतना पड़ेगा। हिंसक दवाओं के माध्यम से शरीर में जाने वाले उन बेजुबान प्राणियों की बद्दुआओं की तरंगें शरीर को दुष्प्रभावों से ग्रसित करें तो आश्चर्य नहीं। अतः चिकित्सा हेतु प्रत्यक्ष या परोक्ष हिंसा, कर्जा चुकाने हेतु ऊँचे ब्याज पर कर्जा लेने के समान नासमझी होती है।

अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियाँ क्यों विश्वसनीय?

अहिंसात्मक चिकित्सा पद्धतियाँ हिंसा पर नहीं–अहिंसा पर, विषमता पर नहीं समता पर, साधनों पर नहीं–साधना पर, परावलम्बन पर नहीं स्वावलम्बन पर, क्षणिक राहत पर नहीं अपितु अन्तिम प्रभावशाली स्थायी परिणामों पर आधारित होती है। रोग के लक्षणों की अपेक्षा रोग के मूल कारणों को महत्त्व देती है। जिसमें साधन, साध्य एवं सामग्री तीनों पवित्र होते हैं। इसमें यथा सम्भव दवा एवं चिकित्सक पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रहती। बिना किसी जीव को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष कष्ट पहुँचाए सहज रूप से उपलब्ध पूर्णतः अहिंसक एवं दुष्प्रभावों से रहित साधनों का सहयोग लिया जाता है। इसमें शरीर, मन और आत्मा में जो जितना महत्त्वपूर्ण होता है, उसको उसकी क्षमता के अनुरूप महत्त्व एवं प्राथमिकता दी जाती है। प्रकृति के सनातन सिद्धान्तों की उपेक्षा नहीं हो, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है। शरीर विज्ञान के विशेष जानकारी की आवश्यकता नहीं होती है। ये उपचार सहज, सरल, सस्ते, सर्वत्र उपलब्ध होने से व्यक्ति को सजग, स्वतंत्र, स्वावलंबी एवं सम्यक् सोच वाला बनाते हैं।

इस जगत में जल ही जीवन है

सम्पूर्ण विश्व में जितने भी प्राणी हैं चाहे वे जल चर हों या नभचर या थलचर हों, साथ ही वनस्पतिक औषधियाँ, पेड़–पौधे क्षुप या अन्य उद्भिज्ज वर्ग इनका जीवित रहना, यदि पुल होना, बढ़ना पनपना यह सब जल के बिना असंभव है। इसीलिए कहा गया है कि जल ही जीवन है। आचार्य भाव मिश्र ने वारिवर्ग में जल का इतना विस्तृत वर्णन किया है कि आधुनिक जल विज्ञान वेता भी इनके जल परिज्ञान के आगे आश्चर्यचकित हुए बिना न रहेंगे। सर्वप्रथम उनके द्वारा उल्लिखित जल के नाम और गुणों का ही वर्णन करते हैं। जल (पानी) के संस्कृत नाम–यथा पानीय, सलिल, नीर, शीतल, जल, अम्बु, आप, वार, वारि, तोय, यमः, पाथ, उरक, जीवन, वन, अम्ब, अर्ण, अमृत, धनराज, और क, ये के सनाम संस्कृत में जल के हैं। प्रायः हिन्दी भाषा में भी इनका बहुतायत में प्रयोग होता है। अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी जल, पानी, नीर आदि के नाम से यह प्रसिद्ध है।

अन्य किसी भी भाषाओं में जल के इतने पर्यायवाची नाम मिलना कठिन है। फारसी में इसे आब कहते हैं जोकि आप शब्द का ही अपभ्रंश है। अंग्रेजी में इसे (WATER) वाटर कहा जाता है इसका पर्यायवाची में तो याद नहीं है। लेटिन भाषा में इसे (AcvA) एक्वा कहा जाता है। अस्तु अब हम यहाँ नीर क्षीर विवेक न्याय से इसके गुणों का उल्लेख कर रहे हैं जो कि स्पष्ट है विशुद्ध यह जल, श्रम, थकावट को दूर करता है, आलस और ग्लानि को मिटाता है। शारीरिक बल को बढ़ाता है। सभी को आश्वासन देने वाला यही है। तुसि और प्रष्टि प्रदान करता है, मूच्छा पिपासा (प्यास) तन्हा वमन और अनिद्रा विवन्ध अरूचि, अजीर्ण आदि को दूर करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस जल के ये गुण अमृत के समान जीवनदायक हैं। अतः इसे कभी न भूल पायें जो कि जल ही जीवन है, कवि रहीम ने स्पष्ट कहा है;

रहिमन पानी राखिये,
बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरे, मोती
मानस चून

अर्थ स्पष्ट है सभी विद्वान जानते हैं कि बिन पानी सब सूना है। अब आगे यहाँ संक्षेप में इसके भेदों को लिखते हुए इसके गुण भी लिख रहे हैं कि किस प्रकसार का जल कितना गुणकारी है। दूषित जल कितने प्रकार की बीमारियाँ फैलाता है। आज देश–प्रदेशों में जल की कमी होती जा रही है। जिन पवित्र नदियों का जल अमृत तुल्य पाया जाता था, वे नदियाँ भी प्रदूषण से प्रदूषित हो गई हैं। छोटी–मोटी नदियों को तो कहना ही क्या है? परम पावनी गंगा, यमुना, कृष्णा, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र, भागीरथी जैसी नदियाँ भी प्रदूषणों से प्रदूषित हो गई हैं। इनके किनारों पर बसे बड़े–बड़े नगर कभी स्वच्छता के प्रतीक रहे होंगे किन्तु आज ये ही नगर अपने अवशिष्ट अस्वास्थ्यकारी प्रदूषणों को इनमें प्रवाहित कर रहे हैं। यहाँ तक कि कानपुर जैसे चमड़ा व्यवसाय प्रधान नगर भी इसमें यह प्रदूषण प्रवाहित करते हैं। आज सुवृष्टि के कारण दिल्ली में यमुना का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर बह रहा है। किन्तु वर्षा के अभाव में इसकी जलधारा क्षीण हो जाएगी, बड़े विशाल पौध वन्धकार

इनके जल से विद्युत उत्पादन करना भी इनकी जलधारा को क्षीण करने में उत्तरदायी है। टिहरी बाँध इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। नदी जल प्रवाहों में अवरोध करके तथा इसमें प्रदूषित कचरा डाल के हम स्वयंम् जलाभाव से त्रस्त हो रहे हैं। जल के भेदों को लिखने से पहले यहाँ हमने जल प्रदूषण के कारणों को लिखा है। अब पढ़िये जल के भेद। मुख्य रूप से जल के दो भेद हैं, यथा (१) दिव्य जल और (२) भौम जला भूमि से अवांप्त जल। पहला दिव्य जल– आकाशीय गंगा से प्राप्त जल है–इस जल के भी चार प्रकार बताये गये हैं, यथा–(१) धारा जल, (२) करका जल, (३) तौषार जल, (४) हैम जल। इन चारों जल का स्पष्टीकरण करके लिख रहे हैं कि धारा जल क्या है, कैसे प्राप्त किया जाता है। धारा रूप में वृष्टि से गिरा हुआ जल स्वच्छ सफेद वस्त्र से छानकर किसी मिट्टी के घड़े में या स्टील के पात्र में रखें।

यह जल विशेष शामक, हल्का, लघु रसायन, बलप्रद तुसि कारक, रोचक, पाचक और मूर्च्छा, अग्नि मान्ध को शमन करता है। इस धारा जल को भी २ विभागों में विभक्त किया गया है यथा–गंगा धारा जल, जो कि सीधे अमृत वर्षा बादलों से प्राप्त होता है।

(१) समुद्र जल–यह समुद्र से सम्बन्धित है, यह जल क्षार युक्त कुछ गन्ध युक्त है। इससे दृष्टि और शक्ति का ह्रास होता है।

(२) कराका जल–यह जल (करका) ओलों से प्राप्त किया जाता है, यह विशुद्धता से ग्रहण करने पर अमृत समान होता है। रूचिकर शीतल और मित्त शामक होता है। मुझे याद है कि वर्षा ऋतु में जब बादल ओले बरसाते थे तो हम ८–६ वर्ष के बालक सावधानीपूर्वक इन ओलों को विस्तृत स्वच्छ आंगन से उठाकर एक करी (मिट्टी का छोटा पात्र) में रख लेते थे और दादा जी दादी जी के कथनानुसार इनके पिघल जाने पर भोजन के बाद इसे पीते थे, बड़ी स्वादिष्ट और रूचिका होता था। आज भी बच्चे वर्षा ऋतु में बरस रहे ओलों को उठाकर कभी–कभी इनका शीतल रसास्वादन कर लेते हैं।

(३) तौषार जल–यह जल ओस (तुषार) कणों से प्राप्त किया जाता है। जिन प्रदेशों में तुषार पात अधिक होता है वहाँ पर संचित किया जाता है। यह जल वानस्पतिक, वृक्ष, क्षुपों के लिए हितकारी है, बद्रीनाथ, केदारनाथ, शिमला, नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत आदि स्थानों में शीतलता और हरीतिमा का मुख्य कारण यह तौषार जल ही है। यह भी रूचिकर अग्निकी पात और पित्त शामक है।

(४) हैम जल–हिमालय पर्वत के उच्च शिखरों पर स्थित बर्फ के पिघलने पर जो जल आता है, उसे हैम जल कहते हैं। यह भी पित्त शामक शीतल और कुछ वात कहो हक है। अब आप भौम जल के भी विभेद और गुण परख लीजिए। इसके तीन भेद होते हैं यथा १. जांगल जल, २. आनूप जल, ३. साधारण जल।

(१) जांगल प्रदेश के स्थान–जहाँ वृक्षा वलि स्वल्प हों इस प्रदेश में एकत्र हुआ जल जांगल जल कहलाता है। यह जल रूप क्षारीय पित्त कफ शामक होता है।

(२) आनूप– यह प्रदेश तटीय स्थानों पर घनी वृक्षाबलि युक्त, कीचड़, कर्दम, आर्द्रता लिए हुए होते हैं। यहाँ पर जल स्निग्ध, घनता लिए हुए गुरु, मन्दाग्नि कारक और वात कफ दोषों को बढ़ाने वाला होता है। सावधानी बरतें।

(३) साधारण– प्रदेशीय जल– जिन स्थानों पर जांगल और आनूप जगहों के लक्षण मिले जुले हों वह स्थान साधारण प्रदेश कहा जाता है। यहाँ पर प्राप्त होने वाला जल मधुर, शीतल और हल्का तृषा की तृप्ति करने वाला होता है। यह विशेष शामक भी होता है। इनके अतिरिक्त १० प्रकार के और भी जल हैं, जिनके नाम और संक्षिप्त गुण आगे लिख रहे हैं।

१. नादेय जल–सभी नदियों से प्राप्त होता है विशुद्ध से प्राप्त किया हुआ निर्मल जल, हल्का, अग्निदीमन, कफ पित्त शामक और कुछ वात कारक होता है।

२. औद्भिद जल–जो जल भूमि से स्रोत रूप में निकलता है वह औद्भिद जल है, यह भी उपरोक्त लाभ देता है।

३. नैझर जल–जो जल पहाड़ों के झरनों से निकलता है वह भी रूचिका मधुर और हल्का रहता है।

४. सारस जल–कहीं पहाड़ों में से रिसकर जल एकत्र हो जाता है वह सारस जल है। यह भी उपरोक्त लाभ देता है।

५. ताडाग जल–जहाँ कहीं भी वर्षा के पानी को तालाब (ताडाग) रूप में एकत्र किया जाये वह ताडाग जल है।

६. वाष्य जल–आजकल तो वापी (बावड़ियाँ) नहीं बनाई जाती किन्तु १०० वर्ष पहले तक बनाई जाती थी, इनके जल तक पहुँचने हित सीढ़ियाँ होती थी। इनके जल को वाष्य जल कहा जाता था।

७. कौप जल–भूगर्भ को खोदकर गोलाकार रूप में कुएँ बनाये जाते थे। प्राचीन भारत में प्रायः इनसे ही अधिक जल ग्रहण किया जाता था, कृषि सिंचाई भी करते थे। आज सब क्रियोय यान्त्रिक हो चुकी हैं।

८. **चौन्त्य जल**–जो कुण्ड चारों तरफ से पत्थरों से युक्त स्वच्छ निर्मल जल वाला पहाड़ों में स्थित हो वह जल कफ पित्त नाशक रूचिका पाचक होता है।

९. **पाल्वल जल**–छोटा तालाब या गर्त

शेष पृष्ठ 10 पर

"समय हमारा साथी कब था?"

समय हमारा साथी कब था
मेरे हिस्से हाथी कब था?
फिर भी हम अपने बूते पर
दुनियाँ मेरे जूते पर
कह दिया मालिक कहते हैं
जो खुद को
मूड नहीं काम का
दूसरा मजदूर देख लो
अपना काम कर सकते नहीं
किस बात पर मालिक कहते हैं खुद को
माना कि मैं महारथी कब था
किन्तु अपने पेट के लिए मैं सदा रथी था।
चींटी का भी अपना जीवन
परिश्रम से तपा अपना यौवन
कम मत आंकना मेरा अपना श्रम
कान में घुस गया तो
हाथी पछाड़ दूंगा
समय नहीं रहा कभी अपना
किन्तु श्रम सदा अपना बल था।
मेरे हिस्से धरा कब थी
किन्तु धरती पर सदा
मेरा चला हल था।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा

मिश्र के पिरामिडों को चुनौती देने वाला अंगकोर का विश्व भर में विशालतम हिन्दू मन्दिर और प्राचीन परिसर

✍ हरिकृष्ण निगम

(पिछले अंक का शेष)

जैसा इंगित किया है आर्थिक और धार्मिक उथल–पुथल अंकोर के पतन के कारण बने थे पर इसके शासक एक–दूसरे शत्रु से भी अनभिज्ञ बने रहे थे। विशिष्ट और आधुनिक नहरों और तालाबों द्वारा जन आपूर्ति प्रबंधन के बल पर अंकोर मध्य युग का ऐसा शहर बन गया था जो सूखे महीनों में जल एकत्र करता था और बरसात के मौसम में अतिरिक्त जल का निकास कर देता था। वह स्थिति जो अंकोर वश के बाहर थी जैसे जलधरा का बदलना या दूर जाना, उससे यही वैज्ञानिक जल नियंत्रण व्यवस्था बरबाद भी हो गई थी। अंकोर का एक सर्वाधिक पवित्र स्थल कुलेन पहाड़ियों के उस स्थान पर स्थित है जहाँ दो नदियाँ, जिनका नाम पुवोक और सियम रियय है, मिलती हैं। अंजीर के पेड़ों की पुरानी टेढ़ी–मेढ़ी शाखाओं की कतार एक खाड़ी के स्वच्छ जल में वहाँ डूबी रहती है। वहाँ अर्धचन्द्राकार पत्थरों की कतारें हैं। नदी की तलहटी में ६ इंच चौड़े काले बलुए पत्थर वस्तुतः घिसे हुए पत्थर के शिवलिंगम हैं जिनको अत्यन्त पवित्र माना जाता है। यह एक मार्ग की तरह नदी में स्थित दूसरे वास्तुकलला के ढाँचे के रूप में दीखते हैं। या दीवारों के एक गज चौड़ी चौकोर पत्थर की आँख जैसी है जिसे शिवलिंग को जीवन के स्रोत के आदिरूप में पूजा जाता है।

अंकोर मन्दिर के प्रमुख पुजारी और उपासक राज्य के कल्याण के लिए आराधना और अर्चना करते थे। नदी के किनारे–किनारे थोड़ा ऊपर जाने पर वहाँ पत्थरों का एक प्राकृतिक सेतु भी है और इस पवित्र स्थल से जुड़ी एक विशाल पहाड़ी पर विष्णु भगवान की ध्यान की मुद्रा में बैठी एक विशाल प्रतिमा है जिनकी नाभि से निकली नाल पर कमल पुष्प में बैठे हैं। इस कुलेन पहाड़ी के ऊँचा स्थान पर विष्णु एवं अन्य देवी–देवता सतत रूप से विराजते हैं, आज भी यह एक लोकप्रिय दन्तकथा है।

कुलेन पहाड़ी से वर्षा के ऋतु के पानी के नीचे बहने का प्रवाह को नियंत्रित और संचित कर अंकोर और इसके शासक सदैव फले–फूले। जयवर्मन द्वितीय के युग से जिसने राजधानी की नींव सन ८०० के दशक के प्रारंभ में डाली थी, साम्राज्य का विकास धन की अभूतपूर्व उपज पर निर्भर था। सारे दक्षिण एशिया में श्रीलंका के प्राचीन नगर अनुराधापुर और पोलोन्नारुवा ही बड़े–बड़े पानी संचित करने के लिए कृत्रिम झीलों के लिए मशहूर थे जिनकी तुलना अंकोर की व्यवस्था और नियंत्रित जल आपूर्ति की क्षमता से की जा सकती है।

लगातार जल प्रबंधन की विश्वसनीयता का कारण इंजीनियरिंग की विशाल और जटिल परियोजना का कार्यान्वयन था। इसमें एक बड़ी झील जो पाँच मील लम्बी और डेढ़ मील चौड़ी थी 'वेस्ट बैरे' कहलाती थी। अंकोर में इस तीसरे और उच्च कोटि के परिष्कृत, विशाल तालाब का आज से लगभग १००० वर्ष पहले एक चमत्कार था। इस काम में लगभग १६ मिलियन क्यूबिक गज मिट्टी ३०० फीट चौड़े बाँध की दीवारों में रखने के लिए कम से कम २००,००० खमेर क्रमिक लगे होंगे। बाँध की यह प्राचीर तीन सौ फीट चौड़ी और तीन मंजिल ऊँची थी। आज भी इस विशाल चौकोर मानव निर्मित झील, जिसे 'बैरे' कहते हैं उसमें पानी 'सियम, रियय' नदी से आता है।

सर्वप्रथम अंकोर के व्यवस्थित और विशाल वाटरवर्क्स की महत्ता प्रकट करने वाले बर्नार्ड–किलिये ग्रोसलियर नाम के पुरातत्वविद ही थे जो फ्रेंच स्कूल ऑफ एशियन स्टडीज में शोधकार्य से जुड़े थे। १६७६ में उनके द्वारा प्रकाशित शोध ग्रंथ में उन्होंने अंकोर को एक 'हाईड्रालिक नगर' की संज्ञा दी थी। विशाल चौकोर बाँध जिन्हें 'बैरे' कहा जाता था, उनके अनुसार दो उद्देश्यों की पूर्ति करते थे। पहला लक्ष्य प्रतीक रूप से हिन्दू–कास्मोजोनी–के–प्राइमेवल सी. को प्रस्तुत करना और दूसरा धन के खेतों की सिंचाई करना। दुर्भाग्य से ग्रोसलियर अपनी अवधारणाओं और निष्कर्षों का आगे नहीं बढ़ा पाए क्योंकि कम्बोडिया में गृहयुद्ध भडक चुका था और खमेर रूज का क्रूर शासन चल रहा था। वियतनामी सैन्य बलों ने जब १६७६ में खमेर रूज शासन को उखाड़ फेंका तब लगभग दो दशकों तक वहाँ किसी का जाना प्रतिबंधित था। जब वियतनामी सेना वहाँ से हटी तब अंकोर में लुटेरे और पुरातात्विक अवशेषों की तस्करी करने वाले उसका ध्वंस करने में जुटे रहे। मूर्तियों की व्यापक चोरी के अलावा भित्तिचित्रों व उत्कीर्ण प्रस्तर प्रतिभाओं को भी खंडित किया गया।

जब क्रिस्टो पौटियर नाम का एक वास्तुविद और पुरातात्विक अंकोर १६६२ में पहुँचा तब उसकी सबसे बड़ी प्राथमिकता कम्बोडिया सरकार की उन ध्वस्त और नष्ट होते हुए मन्दिरों का जीर्णोद्धार करना था। पर पौटियर मंदिर की प्राचीरों और परिसर के परे कई महीने मोटरबाइक पर वृहद अंकोर के दक्षिणी आधे से अधिक क्षेत्र में घूमता रहा और अन्य छिपे दबे हुए मकानों व मंदिरों के टीलों के साथ–साथ कृत्रिम ढलावों, झीलों के मानचित्र बनाता रहा। उसके बाद सन २००० में फ्लेचर और उसके साथी डोमियन इवान्स को अंकोर सम्बन्धी नासा की राडार छवियाँ देखने को शेष पृष्ठ 11 पर

तेलंगाना स्थापना दिवस की प्रथम वर्षगांठ (२-६-२०१५) पर प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट पर प्रतिक्रिया

१. हैदराबाद रियासत का नवाब १६४७ में पाकिस्तान में रियासत का विलय चाहता था या स्वतन्त्र देश के रूप में रहना चाहता था।

२. वह कट्टर मुस्लिम था। रियासत के ६० प्रतिशत हिन्दू उसके व्यवहार से दुखी थे।

३. आर्य समाज और हिन्दू महासभा ने सत्याग्रह करके जेल भरो आन्दोलन शुरू कर दिया जिसका जनता ने खुलकर समर्थन और सहयोग किया।

४. अनुकूल वातावरण देखकर लौह पुरुष सरदार पटेल ने पुलिस कार्रवाई कर दी जिसके फलस्वरूप २–३ दिन में नवाब/निजाम को झुकना पड़ा और उसने रियासत का विलय भारत में कर दिया।

५. २३ जिलों का तेलगू भाषी राज्य आन्ध्रप्रदेश के नाम से बनाया गया जिसकी राजधानी हैदराबाद बनी। पुराने शहर में मुस्लिम ज्यादा हैं और नए शहर में हिन्दुओं का बहुमत है।

६. ४१ वर्ष पूर्व १० जिलों का तेलंगाना नाम से राज्य बनाने की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। अंत में कांग्रेस ने २ जून २०१४ को तेलगांना बना दिया।

७. तेलंगाना की सरकार में एक मुस्लिम को उपमुख्यमंत्री बनाया गया।

८. तेलंभाना सरकार ने पहली भाषा के रूप में उर्दू का विकल्प प्रदान किया है जबकि ऐसी सुविधा अन्य राज्यों में कहीं नहीं है। राज्य की सरकारी भाषा तेलगू है। यह सुविधा असंवैधानिक भी हो सकती है।

६. तेलंगाना में सभी कल्याणकारी योजनाओं के लिए २७००० करोड़ रु० कर राशि दी है।

१०. फिर धर्म और जाति के आधार पर २० योजनाएँ अलग से क्यों चला रखी हैं?

११. यह कार्य धर्म निरपेक्षता के विरुद्ध है।

१२. योजनाएं मुस्लिमों–बी० सी० और ईसाईयों के लिए क्यों हैं?

१३. सवर्णों का क्या दोष है? उन्हें ऐसी योजनाओं से वंचित क्यों रखा गया है?

१४. जो समाज अभी भी पुरानी मानसिकता रखता है उसके लिए १८ प्रकार की योजनाएँ क्यों हैं? बात बात पर झगड़ता है। आक्रामक सोच व प्रवृति का है। अपनी अलग पहचान बनाने में लगा रहता है।

१५. बम फटने अथवा ऐसी घटना करने वालों का सहयोग करता है उन्हें मालामाल क्यों किया जा रहा है?

१६. एम० आई० एम० मुस्लिम लीग जैसी है इसी पार्टी का वहां प्रभाव है जिसके नेता ओवैसी हैं जो जहर उगलते हैं। ऐसे तत्वों के साथ सख्ती का व्यवहार किया जाना चाहिए।

१७. आर्य समाज और हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ताओं का न तो आभार व्यक्त किया गया है और न ही उनके कार्यो को स्मरण किया है। क्या देश भक्त होना अपराध है?

१८. तेलंगाना सरकार की मोहर की पृष्ठभूमि में चार मीनारें दिखाई गई हैं जो निजाम की गुलामी की प्रतीक हैं। वास्तव में वहां आर्य समाज या सरदार पटेल की फोटो होनी चाहिए थी।

१६. अंग्रेजी–तेलगू और उर्दू में तेलंगाना सरकार लिखा है जबकि अंग्रेजी–तेलगू और हिन्दी में तेलंगाना सरकार लिखा होना चाहिए था।

२०. हैदराबाद का पुराना नाम भाग्यनगर था अतः वही नाम पूरे शहर का रखा जाए अथवा पुराने शहर का नाम हैदराबाद और नए शहर का नाम भाग्यनगर रखा जाए।

२१. मुस्लिम समाज रूढ़िवादी है। वह समय के साथ बदलने को कम तैयार है। केन्द्र में कांग्रेस ने मुस्लिमों के लिए २० योजनाएं तो भाजपा ने और शुरू कर दी हैं। तेलंगाना सरकार ने विभिम्न प्रकार की २० योजनाएँ शुरू की हैं इस प्रकार मुस्लिमों को २०+७+२० = ४७ प्रकार की योजनाओं से लाभान्वित किया जा रहा है जबकि वे निजाम समर्थक थे और देश भक्त आर्य समाजियों तथा हिन्दू महासभाईयों को भुला दिया गया है। ऐसा क्यों? उनके प्रति आभार भी व्यक्त नहीं किया गया है।

२२. मेरा आर्य समाज और हिन्दू महासभा के केन्द्रीय नेताओं से निवेदन है कि वे मुख्यमंत्री से मिलें और ज्ञापन देकर बताएं कि निजाम को हटाने में उनकी कितनी प्रमुख भूमिका रही थी और अल्पसंख्यकों की २० योजनाएं बन्द कर दें। उन्हें विशेष महत्व क्यों दिया जा रहा हैं?

आई० डी० गुलाटी

भारतीय भाषाएँ और छात्रों के मानवीय अधिकारों का प्रश्न

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

पिछले दिनों उत्तराखंड के नगर रुड़की में स्थित आई.आई. टी (भारतीय प्राद्यौगिकी संस्थान) ने अपने पचास से भी ज्यादा छात्रों को बाहर का दरवाजा दिखा दिया। संस्थान का कहना है कि ये छात्र पढ़ाई लिखाई में बहुत पिछड़े हुये हैं। यहाँ का कोर्स पूरा कर पाना इन छात्रों के बस का काम नहीं है ये छात्र अपनी फरियाद लेकर राज्य के उच्च न्यायालय के पास भी गये, लेकिन न्यायालय ने भी इन छात्रों को कोई राहत नहीं दी। (वैसे अब संस्थान ने इन छात्रों को दयावश एक मौका परीक्षा पास कर लेने के लिये और दे दिया है) अब प्रश्न यह है कि क्या ये सभी छात्र पढ़ने लिखने में सचमुच इतने निक्कमे हैं, जितना संस्थान बता रहा है? संस्थान के इस तर्क को प्रथम दृष्ट्या तो स्वीकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह संस्थान अपने यहाँ किसी को बिना बौद्धिक जाँच पड़ताल के प्रवेश नहीं दे देता। प्रवेश से पहले यह ठोंक पीट कर स्वयं जांचता है कि छात्र योग्य है या नहीं? यदि योग्य है तभी उसे अन्दर आने दिया जाता है। लेकिन कुछ महीने बाद संस्थान स्वयं ठोंक पीट कर लिये गये अपने छात्रों को अब अयोग्य और निक्कमे बता रहा है। किसी एक आधा छात्र के बारे में संस्थान निकम्मा होने का फतवा जारी करता तो बात समझ आ सकती थी। असली सिक्कों के बीच धोखे से एक आध खोटा सिक्का भी चला ही जाता है। परन्तु यहाँ तो संस्थान बता रहा है कि पूरी गुल्लक ही खोटे सिक्कों से भरी पड़ी है।

लेकिन उपर के तर्कों के बल पर ही संस्थान को कटघरे में खड़ा नहीं किया जा सकता। क्योंकि संस्थान के पास तो पुख्ता प्रमाण हैं। इन छात्रों को पढ़ाने के बाद बार बार परीक्षा ली गई। लेकिन परिणाम हर बार एक ही आया। ये सभी परीक्षा में बुरी तरह फेल हो गये। संस्थान का यही तर्क सभी पर भारी पड़ता है। जब छात्र परीक्षा में पास ही न हो पाये तो संस्थान बेचारा क्या करे? संस्थान ने इन छात्रों को प्रवेश दिया, इससे ही यह सिद्ध होता है कि ये छात्र योग्य है। लेकिन ये छात्र बार बार फेल हो रहे हैं, इससे यह सिद्ध होता है कि ये छात्र अयोग्य हैं। इन दोनों ध्रुवों के बीच की पहेली को सुलझाना जरुरी है।

इन छात्रों का शैक्षिक रिकार्ड तो बहुत बढ़िया है। लेकिन इनमें से ज्यादा की पढ़ाई लिखाई हिन्दी माध यम से हुई है। दसवीं बाहरवीं तक छात्रों को आम तौर पर किसी भी भारतीय भाषा में पढ़ने लिखने की सुविधा प्राप्त है। इस सुविधा का लाभ यह हुआ कि गाँव के, पिछड़ी जातियों के, सामान्य परिवारों के बच्चे भी अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने लगे हैं और ताल ठोंक कर उन लोगों के साथ आकर खड़े हो जाते हैं जिन्होंने सभी सुविधाओं का उपभोग करते हुये अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पढ़ाई की है। कबीर ने कहा भी है, मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान। भाषा के म्यान को परे रख कर जब केवल ज्ञान का मोल किया गया था तो ये छात्र भी दूसरों के समकक्ष आ खड़े हुये थे। लेकिन दुर्भाग्य से रुड़की के इस संस्थान में दाखिल हो जाने के उपरान्त, वहाँ फिर म्यान को लेकर ही चर्चा होने लगी। जिस भाषा में संस्थान इन लड़कों को इंजीनियरिंग पढ़ा रहा था, वह भाषा इन छात्रों के पल्ले नहीं पड़ रही थी और जिस भाषा में ये छात्र इंजीनियरिंग समझना चाहते थे, उस भाषा में न पढ़ाने की अपनी जिद पर संस्थान अड़ा हुआ था। किस भाषा में पढ़ना है, इस विषय पर निर्णय लेने का अवसर आता है, तो हमारे देश में निर्णय करने की ताकत संस्थान के पास है, छात्र के पास नहीं। यह हमारी शिक्षा पद्धति की आतंरिक विसंगति है जिसने न जाने कितने क्षमतावान छात्रों का जीवन लील लिया है। उनकी बौद्धिक क्षमताओं को कुंठित कर दिया है। जब किस भाषा में छात्र को पढ़ना है, इतना ही नहीं बल्कि किस भाषा में उत्तर देना है, इसका निर्णय संस्थान को करना था, तो उसका जो परिणाम निकल सकता है, वही निकला। छात्र लगातार फेल होते गये और संस्थान अपनी जीत के जश्न मनाता रहा। कई समाजों में जीत के जश्न पर बलि देने की परम्परा है। इसलिये संस्थान ने अपनी जीत के अनुष्ठान में इन छात्रों को बाहर निकाल नर बलि देने का कर्मकाण्ड भी पूरा कर लिया।

इस नरबलि से बचने का इन छात्रों के पास एक ही रास्ता था कि वे उच्च न्यायालय में गुहार लगाते। लेकिन इन छात्रों के धैर्य और गुरुभक्ति की दाद देनी होगी कि न्यायालय के पास भी दया की भीख माँगने के लिये ही गये कि संस्थान हमें परीक्षा देने का एक और अवसर प्रदान कर दे। बस इतना ही। हम एक बार फिर संस्थान की भाषा में बोल पाने और लिख पाने में सक्षम बनने के लिये जी जान लगा देंगे। इन छात्रों ने ये नहीं कहा कि संस्थान ने अपने भीतर ही बीमारी के कीटाणु संभाल कर रखे गये हैं, जो प्रतिभावान छात्रों को भी एक आध सत्र में ही पंगु कर देते हैं। उन में हीन भावना भर देते हैं जिसके कारण वे अपनी बौद्धिक क्षमताओं के अनुरूप जीवन में लम्बी छलाँग लगाने में नकारा हो जाते हैं। न्याय तो अन्धा होता है। उसने संस्थान के पक्ष में ही फैसला देना था। उसके लिये निर्णय करने के लिये यह विषय है ही नहीं कि छात्र को अपनी

भाषा में पढ़ने लिखने का अधिकार है या नहीं। उसके लिये देखने का विषय केवल इतना ही है कि संस्थान के मापदंडों पर छात्र पूरे उतरते हैं या नहीं? जब अलग बात है कि ये मापदंड उन विदेशी साम्राज्यवादी शासकों ने अपने हितों के लिये निर्धारित किये थे, जिन्होंने दो सौ साल इस देश पर राज किया और अब उन्हें यहाँ से गये भी सात दशक हो गये हैं। जैसा कि मैंने उपर लिखा है जब छात्र सब जगह से हार गये तब संस्थान ने तरस खाकर उन्हें परीक्षा उत्तीर्ण करने का एक और अवसर दे दिया है। लेकिन जिन कारणों से ये प्रतिभाशाली छात्र फेल हो रहे थे, उन कारणों को संस्थान ने बदलना तो दूर, उन पर गौर करना भी उचित नहीं समझा।

अध्यापन का सबसे उत्तम तरीका अध्यापक की सम्प्रेषणियता है। अध्यापक के पास जो ज्ञान है, वह उसको ठीक तरीके से अपने छात्र तक पहुँचा दे। इस काम के लिये भाषा माध्यम या साधन का काम करती है। जाहिर है अध्यापक की भाषा वही होनी चाहिये जो उसके शिष्यों की भाषा हो। यदि शिष्य और गुरु की भाषा अलग अलग होगी तो ज्ञान सम्प्रेषण का प्रवाह अवरुद्ध हो जायेगा। रुड़की का यह संस्थान राजकीय संस्थान है। वह आम आदमी के पैसे से चलता है। उसी आम आदमी के पैसे से जिसकी भाषा को संस्थान के प्रवेश द्वार पर ही रोक दिया गया है। आम आदमी से संस्थान को चलाने के लिये पैसा तो लिया जा रहा है, लेकिन उसे उसकी भाषा में पढ़ाने को यह संस्थान तैयार नहीं है। संस्थान में अंग्रेजी भाषा में ही पढ़ाये जाने की नीति के पक्षधर यहाँ एक तर्क दे सकते हैं कि संविधान की सूची में तो अनेक भाषाओं को दर्ज किया गया है, इसलिये कल कोई छात्र आकर कह सकता है कि उसे तमिल में पढ़ाया जाये, दूसरा कह सकता है मुझे पंजाबी में पढ़ाया जाये, तीसरा हिन्दी की माँग करेगा और चौथा असमिया की। इस प्रकार तो संस्थान में अराजकता फैल जायेगी। उपर से देखने पर यह तर्क भारी भरकम लगता है। इसके नीचे बाकी सारी बहस दब सकती है। लेकिन यह तर्क उपर से जितना भारी दिखाई देता है, भीतर से उतना ही खोखला है। किसी भी राजकीय संस्थान को दो भाषाओं में पढ़ने की अनुमति तो देनी ही होगी। पहले उस प्रदेश की भाषा जिस में संस्थान स्थित है और दूसरा हिन्दी, क्योंकि वह संविधान के अनुसार राज भाषा है। उदाहरण के लिये जो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान तमिलनाडु में है, उसे तमिल और हिन्दी में पढ़ने पढ़ाने का अधि ाकार तो देना ही होगा। इसके अतिरिक्त वह जितनी ज्यादा भाषाओं में अध्यापन की सुविधा प्रदान कर सकता है वह उसकी उदारता मानी जायेगी। रुड़की का यह संस्थान हिन्दी भाषी प्रदेश उत्तराखंड में स्थित है। अत यहाँ तो छात्रों को हिन्दी में पढ़ने लिखने का और भी ज्यादा अधिकार है।

कुछ अति बुद्धिजीवियों ने छात्रों की जाति तलाशना शुरु कर दिया है। अपनी तलाश में उन्होंने पाया कि अधिकांश छात्र अनुसूचित जातियों के हैं । बस, उन्होंने अपना वही पुराना राग अलापना शुरु कर दिया। अनुसूचित जातियों के छात्रों से अन्याय। और जो लोग अनुसूचित जाति के छात्रों से खार खाए रहते हैं, उन्होंने भी मोर्चा संभाला। हमने तो पहले ही कहा था, जैसी शैली में, कि अनुसूचित जातियों के लिये सीटें आरक्षित करके, आई आई टी जैसे उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता मत बिगाड़ो। ये लोग यहाँ चल नहीं पायेंगे। दरअसल दोनों ही पक्ष उन्हीं साम्राज्यवादी हितों की रक्षा कर रहे, जिन हितों की रक्षा की जिम्मेदारी इन्हें गोरे प्रभु सौंप गये थे। इनका तरीका अलग अलग है और उपर से परस्पर विरोधी भी मालूम पड़ता है, लेकिन उद्देश्य दोनों का एक समान ही है। मारों कहीं, लगे वहीं। अपनी भाषा में पढ़ने के अधिकार की तर्कसम्मत लड़ाई को इन्होंने जाति की लड़ाई में बदल दिया। ध्यान रहे आई आई टी में अनुसूचित जाति के जिन छात्रों को प्रवेश मिलता है, उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ किसी से कम नहीं होतीं। वे भी मुकाबले की लड़ाई जीत कर ही यहाँ तक आ पाते हैं। यह अलग बात है कि यहाँ उनकी घेराबन्दी की पूरी व्यवस्था है। वे कबड्डी में यानि अपनी भाषा में पढ़ने लिखने में माहिर हैं और संस्थान उनको क्रिकेट यानि अंग्रेजी की पिच पर घेर कर मारता है। संस्थान की इस तरकीब को भी स्वीकार किया जा सकता है यदि वह इस घटिया तरकीब में भी संस्थान के सभी छात्रों के साथ समान व्यवहार कर रहा होता। संस्थान यदि उन छात्रों की परीक्षा, जो दस जमा दो की अपनी कलास अंग्रेजी माध्यम से उत्तीर्ण करके आये हैं, हिन्दी भाषा के माध्यम से ले लेता और जो दस जमा दो की क्लास हिन्दी माध्यम से पास करके आये थे, उनकी परीक्षा अंग्रेजी माध्यम से लेता और फिर परिणाम घोषित करता तब पता चल जाता कि विपरीत भाषा में परीक्षा देने से परिणाम पर क्या असर पड़ता है। तब शायद पहले वर्ग के छात्र भी बार बार के प्रयास में पास न हो पाते। संस्थान खेल कोई भी खेले, लेकिन कम से कम खेल के नियम तो सभी छात्रों के लिये समान रखे। दुर्भाग्य से संस्थान यही नहीं कर पाया। नियम अंग्रेजी भाषा के पक्ष में है और खेलने के लिये बुलाया जा रहा है भारतीय भाषा के माध्यम से परीक्षा देने वालों को। इस पर भी धूर्तता यह कि उनके हार जाने पर उनकी योग्यता को लेकर ही प्रश्न खड़े किये जा रहे हैं।

ऐसे मौकों पर बुद्धिजीवियों की एक और जमात नमूदार होती है। यह इस पूरी बहस को एक नया ऐंगल देती है। चेहरे पर गंभीरता इतनी है कि इनकी धूर्तता को कोई लाख चाहने पर भी सूंघ नहीं सकता। इनका कहना है कि उच्च शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से दी ही नहीं जानी चाहिए, क्योंकि भारतीय भाषाओं में पढ़ने से छात्रों के भविष्य पर ग्रहण लग जाता है। उनको नौकरी कहाँ मिलेगी, यह सोच सोच कर इस शेष पृष्ठ 10 पर

आतंकियों से निबटने में न हो राजनीति

✍ मिथिलेश सिंह

पिछले दिनों ऊफा में भारत के प्रधानमंत्री और पाकिस्तानी पीएम की बैठकों के बाद कुछ उम्मीद जगी थी कि कम से कम २१वीं सदी में दोनों देश अपने देश की गरीब जनता पर तरस खाएंगे और आतंक की राह छोड़ने की संभावनाएं तलाशेंगे। लेकिन, कुत्ते की दुम में कितना भी घी लगाया जाय, उससे वह सीधी तो हो नहीं जाती है। नरेंद्र मोदी ने भी पाकिस्तानी पीएम से अपनी पहल पर बात की, इसलिए विपक्षी नेताओं द्वारा प्रधानमंत्री पर तीखा हमला भी किया जा रहा है। केंद्र की मोदी सरकार के गठन के बाद पंजाब में बड़े आतंकी हमले को अंजाम दिया गया। हालाँकि, पंजाब पुलिस के जवानों ने सफलतापूर्वक आतंकियों को मौत की नींद सुला दिया, किन्तु इस आपरेशन में ५ जवानों समेत ३ नागरिकों की भी मौत हो गयी। इस हमले के बाद जहाँ पंजाब में मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने आपात बैठक बुलाई और पूरे पंजाब में अलर्ट जारी कर दिया, वहीं गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने बीसीएफ के महानिदेशक डीके पाठक से बात की और भारत–पाकिस्तान सीमा पर चौकसी बढ़ाने के तत्काल निर्देश दिए। इन प्रशासनिक मुद्दों को सफलतापूर्वक हैंडल करने के बाद, इस मुद्दे पर अनपेक्षित राजनीति भी शुरू हो चुकी है। इस मुद्दे पर एक तरफ जहाँ संसद को ठप्प किया गया, वहीं दूसरी ओर भाजपा और मोदी सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी शुरू कर दिए गए। गौरतलब है कि इस प्रकार का विरोध करने के लिए, हमारे राजनीतिक दल २४ घंटे भी इन्तेजार करने की जहमत नहीं उठा सके। हमारी मानसिकता का ऐसा आलम देखकर यकीन नहीं होता है कि हम अपने देश की एकता, अखंडता के प्रति किस हद तक गैर–जिम्मेवार हैं. पंजाब में हुए इस आतंकी हमले में कई दूसरी बातें भी सामने आयीं, जिन्हें जोड़ने पर खतरनाक संकेत उभरते हैं। एक तरफ कुछ देशद्रोही खालिस्तान के दौर की बातें करने लगे हैं, जिनमें पाकिस्तानी सोशल मीडिया के यूजर्स भी शामिल हैं। पाकिस्तान में भारत विरोधी ट्रेंड कोई नयी बात है नहीं, इसलिए इस पर आश्चर्य नहीं किया जाना चाहिए, किन्तु सच यह है कि उसके द्वारा खालिस्तान के मुद्दे को उकसाया जाना जरूर गंभीर है। इस हमले के दूसरे एंगल के रूप में अमरनाथ यात्रा पर बड़े हमलों की साजिश की बातें कहीं जा रही है, जो घाटी में तनाव उत्पन्न करने और आतंक का नया दौर शुरू करने की कोशिश भी हो सकती है। हालाँकि, पाकिस्तान ने कूटनीतिक चाल चलते हुए पंजाब में हुए आतंकी हमले की निंदा जरूर की है, किन्तु पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल का वक्तव्य गौर करने लायक है कि हमलावर बॉर्डर पार से ही आये हैं और इस बारे में सुरक्षा एजेंसियों ने अलर्ट भी जारी किया था। इस अलर्ट को गंभीरता से न लेने के लिए, प्रकाश सिंह बादल ने केंद्र सरकार पर अपनी भड़ास भी निकाली है और कहा है कि जब सुरक्षा अलर्ट था तब सीमा को सील क्यों नहीं किया गया। पंजाब में ही रेलवे ट्रैक पर जिंदा बम मिलने की पुष्टि भी हुई है, जिसके कारण ट्रेनों की आवाजाही को भी रोकना पड़ा। चर्चित नेता बन चुके अरविन्द केजरीवाल ने भी पंजाब में आतंकी हमलों की निंदा की है, लेकिन सोशल मीडिया पर उनकी कड़ी आलोचना हो रही है, जिसमें उनके द्वारा पुलिसवालों को कहे गए 'ठुल्ला' बयान की निंदा करते हुए यूजर्स पूछ रहे हैं कि आतंकी हमलों में अपनी जान गंवाने वाले पुलिस सिपाही 'ठुल्ला' हैं तो केजरीवाल जैसे नेता क्या हैं? केजरीवाल की पार्टी के कुछ नेताओं द्वारा खालिस्तान समर्थक होने की बातें भी सामने आ रही हैं, जिसकी कड़ी निंदा की जा रही है। ऐसा भी नहीं है कि विपक्ष हर सवाल गलत ही पूछ रहा है, बल्कि उसके द्वारा उठाये गए प्रश्न कई बार जायज भी प्रतीत होते हैं। जैसे, क्योंकि सीमा सुरक्षा के अतिरिक्त आतंकियों को हथियार निश्चित रूप से लोकल सप्लाई से ही मिले होंगे, उन्हें ध्वस्त करने की जिम्मेवारी किसकी है। पंजाब के मुख्यमंत्री बेशक, केंद्र पर इंटेलिजेंस फेल्योर का आरोप लगा दें, किन्तु सच तो यह भी है कि उनकी लोकल इंटेलिजेंस भी फेल हुई है। इसके अतिरिक्त, एक ओर दीनापुर थाने में छिपे तीनों आतंकी पूरी तैयारी के साथ जवानों का मुकाबला कर रहे थे, वहीं पंजाब पुलिस अपने जवानों की सुरक्षा को लेकर इतनी आश्वस्त थी कि उन्हें बुलेट प्रूफ जैकेट्स और हेलमेट देना भी जरूरी नहीं समझा। आतंकी AK–४७ से लड़ रहे थे तो दूसरी ओर पुलिस के जवान पुरानी हो चुकी सेल्फ लोडिंग राइफल्स (एसएलआर) से उनका सामना कर रहे थे। आखिर, पंजाब पुलिस के जवान बिना किसी सुरक्षा के आतंकियों से लोहा ले रहे थे, तो इसकी जिम्मेवारी किसकी बनती है. उनके पास न तो बुलेट प्रूफ जैकेट्स थीं, और न ही उन्हें सुरक्षा हेलमेट के साथ अभियान में उतारा गया था जो अभियान को लेकर नासमझी और एक व्यापक रणनीति की कमी को साफ दर्शाता है। इसलिए आरोप–प्रत्यारोप के अलावा, देश की एकता और अखंडता के लिए, इस कठिन घडी में राजनीति की बजाय अगर देशहित को ध्यान में रखा जाय तो पक्ष और विपक्ष के साथ राज्य सरकार को भी अपना सही कर्तव्य आप ही समझ आ जायेगा, जो किसी भी राजनीति से परे होगा और शायद यही देशहित का मूल भी है। इसके अतिरिक्त, सीमा और लोकल इंटेलिजेंस के अलावा पुलिस का आधुनिकीकरण भी मुख्य मुद्दा है, जिसपर ध्यान दिया जाना उतना ही आवश्यक है, जितना तुच्छ राजनीति से निबटने की इच्छाशक्ति होना।

COAL BLOCK AND SPECTRUM AUCTION DEFYING THE ZERO LOSS THEORY

✍ Shshank Saurav

The recent Spectrum and Coal Block Allocation has proved that former Comptroller & Auditor General (CAG) Vinod Rai was very conservative while assessing the loss to the exchequer. In the year 2008 A Raja (then telecom minister) distributed new telecom licenses at 2001 prices and these licenses were bundled with 4.4 MHz of startup spectrum. Department of Telecom (DoT) changed the existing norms and advanced the cutoff date suddenly (forwarded from October 1, 2007 to September 25, 2007) & then further incorporated "first-come-first-serve" clause to benefit certain particular enterprises. Large scale corruption can be imagined from the fact that enterprises like Swan Telecom and Unitech Wireless sold part of their licenses and made profit of hundreds of crores even before launching their operations. Coal blocks were not only allotted for free but they were allotted to those companies which were never engaged in power sector or ran a coal consuming industry. Some private companies got more coal blocks than it was required for their captive consumption. CAG report also pointed out that some private players sold the coal meant for captive consumption in the market and made profit at the cost of government exchequer. The best way to ensure fair price for any natural resource is the competitive auction method and the UPA government deliberately delayed the introduction of auction process which provided a passage for the favouritism and resulted into arbitrary allocation of coal blocks.

Role of former PM Manmohan Singh

It is worthwhile to note that former PM Manmohan Singh was the coal minister during that time and former Coal Secretary PC Parekh has alleged that Singh had neglected his advice of auction of the coal blocks and continued with the arbitrary allocation. Similarly file noting in PMO shows that Prime Minister's office was fully aware of the facts about the spectrum allocation. There are concrete evidences which shows that Raja's letters were reviewed and a detailed note was prepared on the directions of Manmohan Singh. Even the final plan for spectrum allocation was signed by Pulok Chatterji (Joint Secretary, PMO) and TKA Nair (Principal Secretary, PMO).

> **CAG report on Spectrum and Coal Block Allocation that was tabled in the Parliament in the year 2010 and 2012 respectively accused the UPA government of gross violation and favouritism.**

Very recently Central Bureau of Investigation (CBI) has summoned Manmohan Singh in coal allocation case and after P V Narasimha Rao this is the second time in the Indian history when a PM has been summoned for the investigation.

Infamous Zero Loss Theory

When CAG report came out and the Opposition cornered the government demanding a fair probe in the matter then Kapil Sibbal (then telecom minister) came out with a new concept citing that there is no loss to the exchequer in the 2G spectrum and coal block allocation. He argued that the cheap spectrum has kept

conitnued on page no. 11

क्या धर्मांतरण पर सरकार पाबंदी लगा पाएगी?

✍ मनमोहन शर्मा

आगरा में 'घर वापसी' के अभियान पर मीडिया और संसद में जो हंगामा हुआ उसको देखते हुए संसदीय कार्यमंत्री वेंकैया नायडू को सदन में यह आश्वासन देना पड़ा है कि देश में धर्मांतरण पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक कानून लाने पर विचार किया जाएगा। सवाल यह पैदा होता है कि क्या घर वापसी के प्रश्न पर संसद में बवाल खड़ा करने वाले विपक्षी दल धर्मांतरण पर कानूनी प्रतिबंध लगाने के लिए सहमत होंगे?

सच तो यह है कि जब भी धर्मांतरण पर पाबंदी लगाने के लिए कोई प्रयास हुआ उसका अल्पसंख्यक संगठनों ने डटकर विरोध किया। कारण यह है कि हजारों साल से देश में धर्मांतरण का जो सिलसिला चल रहा है उसका सबसे अधिक लाभ मुसलमानों व ईसाइयों को हुआ।

यही कारण है कि १९७८ में **जब लोकसभा में जनता दल के एक सांसद ओमप्रकाश पुरुषार्थी ने एक निजी विधेयक लाकर देश में धर्मांतरण पर प्रतिबंध लगाने की माँग की थी तो मुसलमानों और ईसाइयों के नेतागण इसको रोकने के लिए सड़कों पर उतर आए थे। देश की राजधानी दिल्ली में ईसाई संगठनों द्वारा इसके खिलाफ जिस मार्च का आयोजन किया गया था उसका नेतृत्व मदर टेरेसा ने किया था।** 'इस्लाम को बचाने' के नाम पर जमीयत उलेमा के अध्यक्ष मौलाना असद मदनी भी मैदान में कूद पड़े थे। इन **दोनों अल्पसंख्यक नेताओं का जोर इस बात पर था कि धर्मांतरण पर पाबंदी लगाना भारतीय संविधान की मूल भावना के खिलाफ होगा जिसकी धारा २५ के तहत प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की गई है। वह किसी भी धर्म को मान सकता है और उसके अनुसार आचरण कर सकता है।**

देश में मोदी के पक्ष में जो जोरदार लहर चल रही है उसके कारण सभी विपक्षी दल बेहद परेशान हैं। उन्हें अपना अस्तित्व ही खतरे में नजर आ रहा है। इसीलिए वह मोदी सरकार के खिलाफ किसी न किसी शोशे की आड़ लेकर देश की जनता को गुमराह करना चाहते हैं। **आगरा में घर वापसी के मुद्दे पर संसद में जो हंगामा किया गया है उसका एकमात्र लक्ष्य देश की जनता में मोदी सरकार के खिलाफ दुष्प्रचार करना है।**

ये विपक्षी दल भले ही सैकुलरवाद का नकार ओढ़ें, मगर वह देश में साम्प्रदायिक तनाव बढ़ाकर अल्पसंख्यकों के वोट बैंक में सेंध लगाना चाहते हैं। इन दलों ने जानबूझकर उस मुद्दे को उछाला है। वह इस बहाने संसद में सरकार को घेरना चाहते थे और संघ परिवार के संगठनों के खिलाफ देश की जनता को भड़काना चाहते हैं। **मुझे इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि अल्पसंख्यक संगठन कभी भी धर्मांतरण पर कानूनी प्रतिबंध लगाने के लिए तैयार होंगे।** यहाँ पर मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हिन्दू धर्म व पारसी धर्म में वही व्यक्ति हिन्दू या पारसी होता है जोकि किसी हिन्दू या पारसी परिवार में जन्मा हो। **हिन्दू धर्म का आधार धर्मांतरण नहीं बल्कि जन्म है जबकि इस्लाम और ईसाई धर्म में यह जरूरी नहीं कि जो बच्चा किसी मुसलमान या ईसाई के घर में पैदा हो उसे जन्म से ही धर्म का अनुगामी मान लिया जाए। ईसाई या मुसलमान बनने के लिए इन धर्मों के धर्माचारी विशेष संस्कारों का आयोजन करते हैं!!.**

इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दुओं ने कभी धर्मांतरण का प्रयास नहीं किया जबकि अन्य धर्म धर्मांतरण के सहारे ही फैले हैं। **बंगलादेशी लेखिका तसलीमा नसरीन का यह कहना सोलह आने सच है कि यदि धर्मांतरण नहीं होता तो इस्लाम का नामोनिशान न होता। इस कड़वी सच्चाई से कोई व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता कि इस्लाम और ईसाई मत भारत में जबरन और प्रलोभन के सहारे फैले हैं।** इस सच के साक्षी ईसाई और मुसलमान इतिहासकारों द्वारा रचित, सैंकड़ों ग्रन्थ हैं जिनमें हिन्दुओं का जबरन धर्मांतरण करने के बेशुमार उदाहरण दिए गए हैं। जिस व्यक्ति को मेरे इस कथन पर शक हो वह मुझसे सम्पर्क करके इन ग्रन्थों की लम्बी–चौड़ी सूची प्राप्त कर सकता है। **इस बात से कोई भी व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता कि इस देश में आज जो करोड़ों मुसलमान और ईसाई हैं उनके पूर्वज कभी हिन्दू हुआ करते थे।**

आज भी इस देश में लाखों मुसलमान और ईसाई ऐसे हैं जिनके पूर्वजों ने किसी जबर या मजबूरी के कारण धर्मांतरण किया था मगर आज भी उनके घरों में हिन्दू देवी–देवताओं की विधिवत् पूजा की जाती है। यदि ऐसे लोग पुनः हिन्दू धर्म में स्व–इच्छा से शामिल होना चाहें तो उनके बारे में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हजारों सालों से विधर्मी इस देश में हिन्दुओं का धर्मांतरण करते आ रहे हैं। **हजरत, ईसा के एक प्रमुख अनुयायी सेंट थॉमस ८६ ईस्वी सन् में मद्रास पहुँचे थे और उन्होंने भारत में हिन्दुओं को ईसाई बनाने का सिलसिला शुरू किया था।** सेंट थॉमस द्वारा स्थापित अर्थोडॉक्स सीरियन चर्च आज भी केरल और तमिलनाडु आदि में फलफूल रहा है। **क्या यह सच नहीं है कि हजरत मोहम्मद साहब के निधन के तुरन्त बाद १११ हिजरी सन में अरब मुसलमानों के कदम मालाबार तट पर पड़ चुके थे?** इसकी साक्षी केरल के कनानोर क्षेत्र में स्थित इस्लाम की दूसरी प्राचीनतम मस्जिद चिन्नामन है। इस मस्जिद का निर्माण काजी कोड़ के हिन्दू शासकों ने करवाया था और अरबों को हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की खुली अनुमति प्रदान की थी।

हिन्दुओं के धर्मांतरण का सिलसिला हजारों सालों से चल रहा है। **इसी तरह से ४०० वर्ष पूर्व पुर्तगालियों ने गोवा में हिन्दुओं को जबरन ईसाई बनाने का जो सिलसिला शुरू किया था उसको भला कौन नहीं जानता!....** जो लोग कभी गोवा यात्रा पर गए हैं उन्हें वहाँ बने हुए अनेक स्मारक याद होंगे जहाँ पर ईसाई धर्म को स्वीकार न करने वालों को जिन्दा जलाया गया था। **यह जरूर है कि अंग्रेजों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए जबर की बजाय प्रलोभन का सहारा लिया।** मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में ईसाई पादरियों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों और धर्मांतरण के लिए अपनाये जा रहे हथकंडों की जाँच के लिए १९६५ **में नियोग आयोग गठित किया गया था जिसने इस बात की पुष्टि की कि ईसाई पादरी धर्मांतरण के लिए जबर और प्रलोभन जैसे अनेक हथकंडों का सहारा लेते हैं। इसके बाद उड़ीसा, बिहार, अरुणाचल प्रदेश आदि राज्य सरकारों ने ईसाई पादरियों की गतिविधियों की जाँच के लिए जो जाँच आयोग गठित किए थे उन्होंने भी नियोगी आयोग के निष्कर्षों की ही पुष्टि की।**

यही कारण है कि कई राज्य सरकारों ने धार्मिक स्वतंत्रता के लिए कानून बनाए ताकि ईसाई पादरी भोले–भाले आदिवासियों को बरगलाकर उनका धर्मांतरण न करवा सकें। ***रोचक बात यह है कि इस तरह के कानून कांग्रेस सरकारों ने बनाए।*** ईसाई पादरी गत ३०० वर्षों से भारत में धर्मांतरण के काम में जुटे हुए हैं। मुस्लिम जगत में जब समृद्धि में वृद्धि हुई तो वह भी इस दौड़ में शामिल हो गए। **सरकारी सूत्रों के अनुसार २०१० में विदेशों से भारत में धर्म प्रचार के लिए आठ हजार करोड़ की धनराशि प्राप्त हुई थी जोकि २०१२ में बढ़कर १४ हजार करोड़ तक पहुँच गई। इसमें से अधिकांश धनराशि का इस्तेमाल धर्मांतरण के लिए किया गया।** उर्दू समाचार पत्रों के अनुसार गत वर्ष इस्लाम धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए देश के विभिन्न भागों में ३५ **विशाल इज्तिमाओं का आयोजन किया गया। इनमें से प्रत्येक पर औसतन ५० करोड़ रुपए खर्च हुए। यह धन कहाँ से आया?** इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि देश के विभिन्न भागों में जो पृथकतावादी आन्दोलनों की आग भड़की उसके पीछे इन विधर्मी धर्म प्रचारकों का हाथ रहा है जोकि विदेशों के इशारों पर इस देश के टुकड़े–टुकड़े करना चाहते हैं। **जहाँ तक घर वापसी अभियान का संबंध है १९२६ में आर्यसमाज ने शुद्धि आन्दोलन के रूप में हिन्दुओं से ईसाई और मुसलमान बने बन्धुओं को अपने पुराने धर्म में वापस लेने का अभियान स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में शुरू किया था। यह प्रयास कट्टरवादियों को नहीं भाया और अलीमुद्दीन नामक एक धर्मान्ध व्यक्ति ने स्वामी जी की निर्मम हत्या कर दी।** इसी तरह से **उड़ीसा में धर्मांतरण का विरोध करने वाले स्वामी लक्ष्मणानन्द को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।** अब जब धर्म **जागरण मंच नामक जैसे संगठनों ने घर वापसी का अभियान पुनः शुरू किया है तो मीडिया और संघ विरोधी दलों ने अपनी सियासी रोटियाँ संकने के लिए इसका विरोध करना शुरू कर दिया है।**

भारतीय महिला हॉकी टीम ने ओलिंपिक के लिए क्वालीफाई किया

भारतीय महिला हॉकी टीम ३६ साल के लंबे अंतराल के बाद ओलिंपिक में वापसी करेगी। क्योंकि उसने अगले साल होने वाले रियो खेलों के लिए क्वालीफाई कर लिया है। लंदन में चल रही यूरो हाकी चैम्पियनशिप के फाइनल में इंग्लैंड के जगह बनाने के साथ भारत को ओलंपिक में प्रवेश मिला। यूरोपीय चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में कल इंग्लैंड ने स्पेन को हराया था जबकि इससे पहले एक अन्य सेमीफाइनल में नीदरलैंड की टीम ने जर्मनी को शिकस्त दी। फाइनल में इंग्लैंड और स्पेन के पहुंचने से एक कोटा स्थान खाली हो गया है क्योंकि ये दोनों ही टीमें पहले ही ओलिंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकी हैं। पिछले महीने बेल्जियम के एंटवर्प में महिला हाकी विश्व लीग सेमीफाइनल्स में पांचवें स्थान पर रहने के कारण भारत को यह कोटा स्थान मिला। अंतरराष्ट्रीय हाकी महासंघ ने पुष्टि की है कि भारतीय महिला टीम रियो खेलों के लिए क्वालीफाई कर चुकी है। भारत अब पहले ही क्वालीफाई कर चुकी नौ अन्य टीमों के साथ ओलंपिक में हिस्सा लेगा। इससे पहले दक्षिण कोरिया, अर्जेन्टीना, ग्रेट ब्रिटेन, चीन, जर्मनी, नीदरलैंड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अमेरिका रियो ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुके हैं। भारतीय महिला हाकी टीम ने पिछली बार १९८० मास्को खेलों में हिस्सा लिया था जहां टीम चौथे स्थान पर रही थी। हाकी इंडिया ने महिला हाकी टीम की इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए सराहना की। यह हाकी इंडिया और पूरे देश के लिए गर्व की बात है। हम पिछले ३६ साल से इसका इंतजार कर रहे थे और यह उपलब्धि हाल के समय की सभी पिछली उपलब्धियों में सबसे यादगार है।

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

वन रैंक, वन पेंशन का वादा पूरा करे सरकार : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके कहा कि केंद्र की मोदी सरकार को पूर्व सैनिकों से किया हुआ वादा तत्काल पूरा करना चाहिए। गौरतलब है कि पिछले महीनों से ज्यादा समय से पूर्व सैनिक जंतर–मंतर पर हड़ताल कर रहे हैं और उनकी मांग है कि वन रैंक, वन पेंशन को जल्द से जल्द लागू किया जाय। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक ने स्पष्ट कहा कि जब प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से वन रैंक, वन पेंशन लागू करने की घोषणा कर चुके हैं तो उसे लागू करने में इतने देरी क्यों की जा रही है। राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने कहा कि भूख हड़ताल पर बैठे सेना के पूर्व सैनिकों की तबियत लगातार बिगड़ती जा रही है और इस प्रकरण से वर्तमान सैनिकों के मनोबल पर भी असर पड़ सकता है, इसलिए इस प्रावधान को जल्द से जल्द लागू किया जाय। हिन्दू महासभा के पदाधिकारियों ने वित्तमंत्री अरुण जेटली की आलोचना करते हुए कहा कि पूर्व सैनिकों के मामले में उन्हें सार्वजानिक बयानबाजी की बजाय कोई बीच का रास्ता निकालना चाहिए, जिससे इस समस्या का निदान हो सके। अगर इस समस्या का हल केंद्र सरकार तत्काल नहीं निकालती है तो हिन्दू महासभा पूर्व सैनिकों के समर्थन में सड़क पर उतरने का निर्णय लेगी।

रामचरित मानस के डिजिटल एडिशन के लिए प्रधानमंत्री को बधाई, राममंदिर बनाने और समान आचार संहिता लागू करने की मांग : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को रामचरित मानस का डिजिटल एडिशन लांच करने के लिए बधाई देते हुए इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहद लाभदायक बताया है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आकाशवाणी द्वारा तैयार 'रामचरितमानस' के विशेष डिजिटल संस्करण को जारी करते हुए कहा कि रामचरितमानस ने हमारी हस्ती बनाए रखी है, इसलिए मिटती नहीं। उन्होंने रामचरितमानस के डिजिटल वर्जन को संगीत, संस्कार और संस्कृति की साधना बताया और कहा कि इस वर्जन से दूसरे सरकारी कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने इसे एक अनूठी पहल बताते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार को इससे आगे बड़कर राम मंदिर बनाने और समान आचार–संहिता पर कार्य करने को तैयार होना चाहिए, क्योंकि देश के हिन्दुओं ने इन्हीं मुद्दों के लिए उनका चुनाव भारी बहुमत से किया है।

शेष पृष्ठ 7 का भारतीय भाषाएँ और छात्रों के.....

जमात का हाजमा खराब होने लगता है। छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुये यह जमात, उच्च शिक्षा, खास कर विज्ञान के विषयों की, भारतीय भाषाओं में देने का निषेध करती हैं। आम आदमी इस जमात की मंशा को लेकर धोखा खा जाता है। वह सोचता है, ठीक ही कहते हैं। इस जमात का इसमें अपना स्वार्थ तो है नहीं। बेचारे हमारे भविष्य की खातिर तो कह रहे हैं। लेकिन सच्चाई इसके विपरीत है। पहला प्रश्न तो यही है कि इनको, दूसरों के भविष्य को लेकर दूरगामी प्रभाव के निर्णय लेने का अधिकार किसने दिया? कहीं ऐसा तो नहीं कि इनको चिन्ता अपने भविष्य की है और ये नाटक भारतीय भाषाओं में पढ़ने वाले छात्रों के भविष्य की चिन्ता का कर रहे हैं? उच्च शिक्षा संस्थानों में पढ़ने के लिये जो भी छात्र आते हैं, वे बालिग या व्यस्क ही होते हैं। उनको हमारा संविधान सभी अधिकार देता है। वे सम्पत्ति खरीद और बेच सकते हैं। वे अपने जीवन का सबसे बड़ा निर्णय यानि अपनी इच्छा से विवाह करने का अधिकार रखते हैं। इतना ही नहीं, उन्हें वोट देने का अधिकार है। संविधान मानता है कि वे इतने मैच्योर हो चुके हैं कि अपनी इच्छा से सरकार बना सकें। परन्तु उन्हें यह निर्णय करने का अधिकार नहीं है कि उन्हें किस भाषा में परीक्षा देनी है। किस भाषा में पढ़ना है। यह निर्णय करने का अधिकार उनके पास नहीं है। उनका यह अधिकार, उन्हीं के भविष्य की दुहाई देकर छीना गया है। हमारा तर्क बहुत सीधा है। एक बालिग व्यक्ति को यदि लगता है कि उसका भविष्य अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ने लिखने में है तो वह जरुर अंग्रेजी माध्यम से पढ़ेगा और लिखेगा। उसे ऐसा करने का पूरा अधिकार भी है और सरकार उसके इस अधिकार की रक्षा भी करती है। लेकिन दूसरे बालिग व्यक्ति को लगता है कि उसका भविष्य भारतीय भाषा में पढ़ने लिखने में है। उसे भी इसका अधिकार है। लेकिन दुर्भाग्य से सरकार और उस द्वारा संचालित शिक्षा संस्थान उसे उसका यह अधिकार देने को तैयार नहीं है। जाहिर है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में बालिग छात्रों के दो समूह बन गये हैं। पहला समूह अपना भविष्य अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने लिखने में देखता और दूसरा समूह अपना भविष्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ने लिखने में देखता है। बालिग होने के कारण दोनों समूहों के छात्रों को यह निर्णय करने का अधिकार है। लेकिन उच्च शिक्षा संस्थान पहले समूह के इस अधिकार की तो रक्षा करते हैं लेकिन दूसरे समूह के छात्रों के अधिकार की रक्षा करने की बात तो दूर, वह उसका डंके की चोट पर हनन करते हैं। इसलिये मूल प्रश्न भारतीय भाषाओं के महत्त्व या उनकी उपादेयता का नहीं है, बल्कि यह प्रश्न एक खास वर्ग के मानवीय अधिकारों के हनन का है ।

रुड़की का यह संस्थान अपने छात्रों से पहले तो, उनका यह मानवीय अधिकार या जन्म सिद्ध अधिकार छीनता है और उसके बाद उनको अयोग्य घोषित करता है। वह पहले उनके प्रकृति प्रदत्त कवच और कुंडल छीनता है और उसके बाद उनको निहत्था करके, उन्हें अयोग्य घोषित करता है। लेकिन आश्चर्य है कि इस बात पर तो सभी टीका टिप्पणी कर रहे हैं कि उन छात्रों को एक और अवसर दिया जाना चाहिये या नहीं, लेकिन मूल प्रश्न की ओर कोई ध्यान देने को तैयार नहीं है। यहाँ तक भी सिर धुना जा रहा है कि कैसे कैसे लोग अब आई आई टी तक में आने लगे हैं। भाव कुछ इसी प्रकार का है जैसे किसी अभिजात्य वर्ग के क्लब में कोई धोती पहने नंगे पैरों, देहात का आदमी घुस आया हो। किसी ने यह प्रश्न नहीं उठाया कि इन छात्रों के अपनी भाषा में पढ़ने के मानवीय अधिकारों की भी रक्षा की जानी चाहिये। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग भी चुप्पी साध कर बैठ गया है। अपने देश में आतंकवादियों के मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिये भी खून पसीना एक कर देने वाले खूंखार बुद्धिजीवियों की भी एक जमात है। याकूब मेनन के मामले में, उसके मानवीय अधिकारों के लिये लड़ने वाले अली बाबा के ऐसे चालीस चोरों ने तो अपनी शिनाख्ती परेड भी इस देश के लोगों के सामने कर दी थी। लेकिन इस ग्रुप के मुँह पर, इन प्रतिभाशाली छात्रों के मानवीय अधिकारों का प्रश्न आने पर ताला क्यों लग गया? यहाँ यह ध्यान रखने की भी जरुरत भी है कि रुड़की के संस्थान का नाम तो इस पूरी बहस में केवल एक प्रतीक के रुप में प्रयोग किया गया है। यह बहस और इसमें उठाये गये मुद्दे भारत के सभी उच्च शिक्षा संस्थानों पर समान रुप से लागू होते हैं। एक और समूह भी इस पूरी बहस में अपनी हिस्सेदारी संभाल कर बैठा है। यह समूह, उपर से देखने पर उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश ले लेने के बावजूद वहाँ के माहौल में स्वयं को मिसफिट पाते हुये, अनुत्तीर्ण हो गये छात्रों का सबसे बडा हितचिन्तक दिखाई देता है। लेकिन असल में यह समूह इन छात्रों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह समूह सबसे पहले तो व्यवस्था और सरकार को लताड़ लगाता है कि वह भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ कर आये छात्रों को आई आई टी और ऐसी ही अन्य संस्थाओं में प्रवेश दे देने के बाद उनकी भूल जाती है। अब इन छात्रों की अंग्रेजी कमजोर है, इसीलिए तो ये छात्रों बाकी छात्रों के साथ चल नहीं पाते और फेल हो जाते हैं। इसलिये शिक्षा संस्थानों को चाहिए कि वे ऐसे छात्रों को अंग्रेजी में अव्वल बनाने के भी प्रयास करें ताकि ये छात्र दूसरे छात्रों का मुकाबला कर सकें। इस समूह के इस दयानुमा सुझावों के पीछे वही धूर्तता छिपी हुई है कि यदि आई आई टी में पढ़ना है तो अंग्रेजी तो सीखनी ही पड़ेगी। हाँ तुम्हें सिखाने के अतिरिक्त प्रयास किये जा सकते हैं। कोई कम्बख्त यह नहीं कहता कि जो छात्र भारतीय भाषाओं में पढ़ना चाहते हैं, उनके लिये वैसी ही व्यवस्था कर दी जायेगी, ताकि सारी समस्याओं का ही अन्त हो जाये।

शेष पृष्ठ 1 का पाकिस्तान ने एक बार.....

राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मांग की है कि गुलाम कश्मीर (पाक अधिकृत कश्मीर) को भारत में भारत में सम्मिलित करने की प्रक्रिय शीध्र शुरु हो। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि भारत की संसद ने प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया है कि पाक अधिकृत कश्मीर भारत का क्षेत्र है। इसलिये उस पर तुरन्त कब्जा किया जाये।

शेष पृष्ठ 5 का इस जगत में जल ही.....

जहाँ पर वर्षा का पानी एकत्र हो और समय पाकर वह सूख भी जाए वह पाल्वल जल होता है–भारी अभिस्टान्दी त्रिदोषकरक विशेष कारक है। पाल्वल शक से याद आता है यहाँ कवि कालिदास का यह पद्य से सस्वलोन्तीर्ण वइाह यथान्यावास वृक्षोंन्मुख वर्हिणानि रघुवंश।

१०. वेकिर जल–यह जल नदियों के किनारों पर कुछ नीचे खादन पर मिल जाता है। यह स्वच्छ शीतल आलस्य दूर करने वाला पित्त शामक मधुर और हल्का होता है। इस प्रकार आयुर्वेद शास्त्रों में जल का पूर्ण विश्लेषण करके वात पित्त कफ त्रिदोष की दृष्टि से लाभकारी है। आज वैज्ञानिक युग में भी इनको कसौटी पर कस कर देखा जा सकता है। ये उतने ही प्रभावी हैं जितने पहले थे. जल की शुद्धता परमावश्यक है। किस प्रकार दूषित जल को शुद्ध किया जाये आगे फिर कभी लिखेंगे।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 6 का
मिश्र के पिरामिडों को चुनौती...

मिली। विस्मय से उसकी आँखें खुली की खुली रह गई। उसके लिए यह एक अभूतपूर्व खुलासा था। सिडनी विश्वविद्यालय की टीम, फ्रेंच स्कूल आफ एशियन स्टडीज (ई.एफ.ई.ओ.) और 'अप्सरा' नाम की कम्बोडिया की अंकोर पर शोध करने वाली शोध टीम के साथ मिलकर अनेक प्राचीन मानव बस्तियों, नहरों के जाल, कृत्रिम बाँधों और तालाबों के अवशेषों को अंकोर के अनछुए क्षेत्रों में ढूँढ़ निकालने में सफल हुई जिसने इतिहासकारों को फिर एक बार चमत्कृत कर दिया। उन्होंने बाँधों में जल प्रवेश व निकास के बनाए रास्तों और उनके निर्माण के तकनीकी तथ्यों को भी निकाल कर प्रस्तुत किया। सारे शोधकर्ता अंकोर के पुराने इंजीनियरों की महत्त्वाकांक्षा को देखकर चकित रह गए। फ्रलेचर ने लिखा है कि उन्हें इस बात को भी देखकर विस्मय हुआ कि बृहद अंकोर का सारा दृश्यपटल और परिवेश कृत्रिम और मानव–निर्मित था। कई शताब्दियों तक सैकड़ों हजारों श्रद्धालु, श्रमिक सैकड़ों मील लम्बी नहरें और बाँध बनाते रहे, वहाँ की जमीन के प्राकृतिक ढलानों का अध्ययन करते हुए पुवोक, रोलुओज और सिरान रीप नदियों के पानी को कृत्रिम बाँध में भरने के लिए मोड़ते रहे, बरसात के मौसम में उफनती हुई जलधाराओं के अतिरिक्त पानी को बाँध में पहुँचाना और जब अक्टूबर या नवम्बर में वर्षा थम जाए तब सिंचाई के लिए बनाई गई नहरों द्वारा एकत्रित पानी का आवश्यकतानुसार निकास किया जाए। फ्रलेचर के अनुसार, "यह एक अविश्सवनीय रूप से कारगर प्रणाली थी।" यह चतुरतापूर्ण जल प्रबंधन ने सामान्य दृष्टि और दूरगामी महान अन्तदृष्टि का अंतर सामने रख दिया था। जब दक्षिण पूर्वी एशिया के अनेक देश अतिवृष्टिवाद और अनावृष्टि या सूखे सदैव झेलते रहे थे अंकोरवासियों के वैज्ञानिक निर्माण कार्य जो विस्तृत वाटरवर्क्स के ढाँचे में आज भी देखे जा सकते हैं विस्मयकारी है। नदी के प्रवाह को मोड़ने व उन्हें भूमिगत विशाल तालाबों में डालने के लिए विशाल पत्थरों के "स्पिल वे" अथवा 'स्लूस गेट' बनाना फ्रलेचर के अनुसार उस समय के इंजीनियरों के सार्वजनिक निर्माण का चमत्कार था। मौसम के संघातक बारिश या सूखे के दौरों में अंकोर के शासकों को हिला दिया होगा। सारा नगर बाद के वर्षों में इन खतरों से असुरक्षित होता गया होगा। अंकोर के चारों ओर की दुनिया बदलती जा रही थी। मौसमों की अराजकता और सूखे के कुछ सालों में राजनीतिक और धार्मिक बदलावों को शुरू कर दिया। अयुश्या का अंकोर पर आक्रमण और खमेर सम्राटों को अपदस्थ करना ऐसे ही किसी समय में हुआ होगा। एक विशेषज्ञ के अनुसार खमेर साम्राज्य पहली बड़ी सभ्यता नहीं थी जो मौसम की आपदाओं से नष्ट हुई। शताब्दियों पहले जब अंकोर का भाग्य उदय हो रहा था आधी दुनिया दूर मेक्सिको और मध्य अमेरिका की माया सभ्यता के बड़े नगर अपने पर्यावरण के नाश को मौसमों के बदलाव के साथ देख रहे थे। अनेक विशेषज्ञ आज मानते हैं कि जनसंख्या में वृद्धि और पर्यावरण–प्रदूषण ने ६वीं शताब्दी में तीन बड़े सूखों व अकाल का यहाँ के बड़े नगरों को दण्ड दिया था। येल विश्वविद्यालय के नृवेश शास्त्री माइकेल को एक ऐसे पहले विशेषज्ञ थे जिन्होंने सन १६५० में खमेर और माया सभ्यताओं के बीच साम्य पाया था। अंकोर का पतन आधुनिक सभ्यताओं को भी एक शिक्षा का उदाहरण बन सकता है। आधुनिक समाज को भी बड़े मौसमी परिवर्तनों से सीख लेना चाहिए। सारी खमेर जाति ने अपनी उच्चतर सभ्यता और वैज्ञानिक खोजों के निवेश से अपनी दुनिया बदल डाली थी पर बड़े सूखे या 'मेगा ड्राउट' ने अंकोर के जल प्रबंधन की 'हाईड्रालिक प्रणाली' जो एक विस्मयजनक वैज्ञानिक 'मेकेनिज्म' बनाया गया था वह छह शताब्दियों तक चलने के बाद असफल क्यों हुआ? मात्र सूखे के वर्षों के झटके के कारण। यह फ्रलेचर का निष्कर्ष था।

अंकोर की स्थापत्य कला आज भी तत्कालीन परिष्कृत सभ्यता और हिन्दू धर्म के अनेक पक्ष व रीति–रिवाजों को जिनसे हम आज भी परिचित हैं, जीवन्त रूप में चित्रित करती है। राजवंशों का उदय और पतन होता रहा, पर कहीं पर उनकी विशाल मूर्तियाँ या पत्थरों पर उत्कीर्ण चित्रकारी नावों पर बैठे आयुधों के साथ सैनिकों को दिखाती है, कहीं एक मगर मछली खाते चित्रित है, कहीं मुर्गों की लड़ाई हो रही है या चौपड़ खेली जा रही है और कहीं ध्यानमग्न योगी की मुद्रा में पुजारी बैठे हैं और कहीं ऊँची पहाड़ी के प्रांगणों में धार्मिक कृत्य हो रहे हैं। विशाल मंदिरों के परकोटों या खुले स्थानों पर उनके रक्षकों के रूप में विशाल सिंह, आग की लपटों के रूप में नागों या यक्षों की प्रतिमाएँ भी हैं। कुलेन पहाड़ियों पर जो दो बड़ी नीचे बहने वाली नदियों का उद्गम था उससे लगी हुई विशाल चट्टानों पर कमल के फूल तथा विष्णु आदि अनेक देवी–देवताओं की उत्कीर्ण प्रतिमाएँ सदियों से धूप, हवा और पानी का सामना करने के बाद भी ऐसी सुन्दर हैं कि जैसे उनके चेहरे की शान्ति कुछ संदेश दे रही है। यहाँ मेरु पर्वत भी है, समुद्र मंथन के दृश्य भी हैं और विशाल पत्थरों के परकोटे व गगनचुम्बी ज्यामितीय उठते हुए मंदिरों के शिखर भी हैं। क्या यह आश्चर्य नहीं है कि प्राचीन विश्व के जिन महान स्मारकों जैसे मिश्र के पिरामिडों आदि के समकक्ष इस हिन्दू सभ्यता के प्रतीक अंकोर को स्वयं फ्रांसीसी और अमेरिकी पुरातत्वविद रखना चाहते हैं और उसे विश्व की विस्मयजनक धरोहर की संज्ञा दे रहे हैं, उससे हम इस देश में अवगत भी नहीं हैं। हिन्दुओं के इस प्राचीन काल की विकसित की गई अभियांत्रिकी के चमत्कार और पवित्र तीर्थ के जीवन्त प्रतीक को कम से कम स्थापत्य और मूर्तिकला की उत्कृष्टता को देखने का हर भारतीय का अधिकार है। क्या हमारी केन्द्रीय सरकार इस महान विरासत को नजदीक से आत्मसात करने के लिए तथा वहाँ की यात्रा सुगम बनाने के लिए इच्छुक धार्मिक पर्यटकों को आर्थिक सुविधाएँ या छूट नहीं उपलब्ध करा सकती है? बहुसंख्यक समाज की यह माँग उतनी ही प्रासंगिक है जितनी इतर धर्मों के अनुयाइयों की हर धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमारी कथित पंथनिरपेक्ष सरकार बेचैनी दिखाती रहती है।

शेष पृष्ठ 1 का
भारत की यात्रा करेंगे.....

ने भी जनवरी में राष्ट्रपति पद के लिए चुने जाने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए भारत को चुना। देश के प्रमुख का पद संभालने के बाद जनवरी से विक्रमसिंघे की यह पहली विदेश यात्रा होगी। विक्रमसिंघे श्रीलंका के विदेशमंत्री मंगला समरवीरा के साथ स्वराज से बातचीत करेंगे। श्रीलंका के अधिकारियों ने बताया कि द्विपक्षीय वार्ता में जिन मुद्दों पर बातचीत होने की संभावना है, उनमें मछुआरों का मुद्दा और व्यापक आर्थिक सहयोग संधि शामिल है। विक्रमसिंघे ने भारत के साथ मजबूत संबंधों के प्रति वचनबद्धता दिखाई है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा, एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि श्रीलंकाई प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान उनसे भारतीय मछुआरों की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता के आधार पर करने की मांग भारत सरकार को करनी चाहिए। क्योंकि बार–बार श्रीलंकाई एजेंसियों के द्वारा भारतीय मछुआरों को परेशान करने का कार्य किया जाता है।

conitnued from page no. 9
COAL BLOCK AND ...

the call rates low and helped to increase the tele-density. These baseless arguments were even not supported by his own party men but it surely helped to divert the attention from Manmohan Singh and PMO which were kept informed about all the decisions.

Success of recent allocations

The spectrum allocation is still under progress and about 88 per cent of the spectrum has been provisionally allocated to the bidders for which they have committed over Rs 1,05,000 crore. Bidding amount for 32 coal blocks (out of 204 which were cancelled) has also crossed more than Rs 2,00,000 crore. It is expected that bidding amount for total coal blocks can exceed to Rs 15 lakh crore. Former CAG Vinod Rai can also have a sigh of relief after the huge success of these auctions and those who raised questions on his objectivity and went to the extent of propounding new economic concepts have nothing to explain now. Now it is very much clear that the UPA government should have acted as custodian of natural resources but they allotted it at throw away prices to benefit particular business groups and took kick-backs at the cost of exchequer. As far as investigation is concerned, Supreme Court has conveyed its displeasure on various occasions and the federal agency should try to come out of its image of a "caged parrot".

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.......................................150/- रुपये
द्विवार्षिक.......................................300/- रुपये
आजीवन सदस्य.......................................1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

दिनांक 23 सितम्बर से 29 सितम्बर 2015 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
पद्मा एकादशी	24 सितम्बर	वीरवार
प्रदोष व्रत	26 सितम्बर	शनिवार
श्राद्ध प्रारम्भ	27 सितम्बर	रविवार
पूर्णिमा, एकम् श्राद्ध	28 सितम्बर	सोमवार
भगत सिंह जयंती	28 सितम्बर	सोमवार
द्वितीया श्राद्ध	29 सितम्बर	मंगलवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

हिन्दू है तो भारत है

जब १६४७ में मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बन गया था तो यह कहना कि आज हिन्दुओं से ही भारत है, अनुचित नहीं होगा। भारत है तो हिन्दू है और हिन्दू है तो भारत है। अतः धर्म से ऊपर उठ कर पार्टी की बात करना बेमानी है। जिस देश में जातियों के आधार पर राजनीति होती हो तो वहां राष्ट्र की एकता व अखण्डता बनाये रखने के लिए जातिगत भेदभाव से ऊपर उठ कर राष्ट्र की रक्षार्थ धर्म को आधार बनाना ही होगा। अतः धर्म के विरुद्ध कार्य करने वाले राजनेता वो चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो जाये अपने स्वार्थ में रहेगा तो उसकी राजनीति अस्थिर हो सकती है। आज हिन्दू धर्म रक्षको का भारतीय जनता पार्टी के कुछ नासमझ नेता राजमद में अपमान करने का दुःसाहस कर रहें है। जिसके परिणामस्वरूप **लव जिहाद व घर वापसी** को भी नकारा गया। हिन्दू संतो का अपमान करके कुछ युवा नेता अहंकारी हो रहे हैं पर वे जिहादियों के समक्ष बगलें झाकने को क्यों विवश हो जाते है? वे इतिहास नहीं जानना चाहते तथा न ही वे भविष्य के लिए चिंतित है। वे राजमद में शपथ भूल कर चापलूसी व चाटुकारिता की राजनीति अपना कर सत्ता सुख में जीना चाहते है। तभी तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने पहली बार अपने ही एक वरिष्ठ अधिकारी की छत्र छाया में चल रहें **मुस्लिम राष्ट्रीय मंच** द्वारा रोजा इफ्तार की दावतें दी। क्या ये लोग भारत में स्वतंत्रता के समय की गयी गांधी–नेहरु की गलती से पाठ नहीं पढ़ना चाहते? सोचो जरा, अपने संतों व कार्यकर्ताओ का बहिष्कार करके साम्प्रदायिक सौहार्द बनाने के लिए किससे व किसके लिए बाहें पसारी जा रही है? १६४७ से पहले ही अनेको अनुभवी महापुरुषों ने बताया था कि आप कितने ही प्रयास क्यों न करलें हिन्दू–मुस्लिम एकता स्थापित नहीं हो सकती? यहाँ तक की पाकिस्तान की स्थापना करने वाले मो० अली जिन्नाह ने भी इसी आधार पर देश के विभाजन की मांग की थी कि हिन्दू–मुस्लिम दोनों की संस्कृतियों, सभ्यताऐ व श्रद्धायें आदि अलग अलग है अतः दोनों का एक साथ रहना संभव ही नहीं। आज जबकि एक ओर जहां जिहाद के लिए चुनौती बने कट्टरपंथी भटके हुए मुस्लिम युवा व इस्लास्मिक आतकंवादी संगठन इस्लामिक स्टेट, लश्करे–ए– तोइबा, अलकायदा, इंडियन मुजाहिदीन जो भारत को दारुल–इस्लाम या खिलाफत के लिए खुरासान बनाने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ना चाहते वहीं दूसरी ओर हजारो घाव की भूख से त्रस्त जिहाद के लिए ही पाकिस्तान निरंतर युद्धविराम उल्लंघन करके सीमाओं पर हमारे जवानों व नागरिको को मारने में व्यस्त है, तो ऐसे में हम अपने ही राष्ट्रभक्तों व धर्म बंधुओ का बलिदान करवाकर व तिरस्कार करके आत्मघाती नीति की ओर क्यों बढ़ रहें है? ध्यान देना होगा कि भारत एक विशाल लोकतांत्रिक राष्ट्र है किसी भी राजनैतिक दल की धरोहर नही। अतः आज बहुसंख्यक हिन्दुओं की राजनीति केवल राजनीति ही नहीं है वे बीजेपी से एक सुदृढ़ राष्ट्रवादी राजनीति की आशा लगायें बैठे है। अन्ततोगत्वा भारत भूमि ही तो उनकी पूण्यभूमि, जन्मभूमि, पितृभूमि, मातृभूमि व कर्मभूमि है और उसकी ही सुरक्षा में सभी का अस्तित्व सुरक्षित है।

विनोद कुमार सर्वोदय

मशहूर भारतीय वैज्ञानिक को मिला पहला सुनहाक शांति पुरस्कार

भारत और कई देशों में मत्स्य पालन के क्षेत्र में अग्रणी काम करने वाले प्रसिद्ध भारतीय कृषि वैज्ञानिक डॉ० एम विजय गुप्ता को नोबेल पुरस्कार के विकल्प के तौर पर देखे जा रहे पहले सुनहाक शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्होंने द्वीपीय देश किरिबाती के राष्ट्रपति के साथ साझा किया। ७६ साल के गुप्ता और किरीबाती के राष्ट्रपति अनोते टोंग को यहां एक भव्य समारोह में संयुक्त रूप से दस लाख डॉलर की पुरस्कार राशि दी गयी। समारोह में दुनिया भर के गणमान्य लोग शामिल हुए। प्रशांत महासागर में स्थित द्वीपीय देश के ६३ साल के राष्ट्रपति टोंग को छोटे द्वीपीय देशों के लिए अभिशाप साबित हो रहे कार्बन उत्सर्जन को खत्म करने को लेकर उनके दृढ़ संघर्ष के लिए यह पुरस्कार दिया गया। किरिबाती २०५० तक बढ़ते समुद्रीय जल में डूबने के गंभीर खतरे का सामना कर रहा है। पुरस्कार दक्षिण कोरिया की धार्मिक नेता डॉ० हाक जा हान मून ने प्रदान किया। मून दिवंगत रेव सुन म्यूंग मून की पत्नी हैं जिन्होंने लोगों की भलाई के लिए ठोस प्रयास कर रहे लोगों के काम को मान्यता देने के लिए पुरस्कार की स्थापना की थी। आंध्र प्रदेश के बापतला के रहने वाले गुप्ता एक जीवविज्ञानी हैं और उन्हें मीठे पानी में मत्स्यपालन के लिए कम लागत की तकनीकों के विकास एवं प्रसार के लिए २००५ में विश्व खाद्य पुरस्कार दिया गया था। वह सेवानिवृत्त होने से पहले वर्ल्डफिश नाम के एक अंतरराष्ट्रीय मत्स्य पालन शोध संस्थान में सहायक महानिदेशक थे।

कबिरा खड़ा बजार में

नहीं सुनते किसी के मन की बात

पूर्व प्रधानमंत्री और वर्तमान प्रधानमंत्री में तमाम भिन्नताएं हों, लेकिन एक खास भिन्नता है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री बोलते कम थे और वर्तमान प्रधानमंत्री सुनते कम हैं। वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी केवल बोलते हैं। अपने मन की बात, उन्हें दूसरे के मन की बात से कोई लेना देना नहीं होता। अरे वह तो सुनना ही नहीं चाहते कुछ। बस बोलते ही रहते हैं। हां, कुछ खास मौकों पर चुप्पी साध लेते हैं। वह अलग बात है। अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर मौनी बाबा बन चुके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ११वीं बार अपने मन की बात देश से की। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में यह बात तो समझ में आ गई कि वे केवल मन की बात ही नहीं करते, बल्कि वही करते भी हैं जो उनका मन करता है और दूसरों की सुनने में उनकी खास दिलचस्पी नहींहै। लेकिन शायद राजनीति और सत्ता चलाने की मजबूरी ही थी कि जिस भूमि अधिग्रहण विधेयक को वे अपनी मर्जी से लागू करवाना चाहते थे और जिसके लिए उनकी सरकार अध्यादेश लाई थी, ३१ अगस्त को उसकी समय सीमा समाप्त हो रही है, अब सरकार ने उसे आगे न बढ़ाने का फैसला किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार का मन खुला है और वह किसानों के हित के किसी भी सुझाव को स्वीकार करने तैयार हैं। हालांकि अपने अड़ियल रूख से पलटते हुए भी प्रधानमंत्री इसका दोष विपक्षी कांग्रेस पर मढ़ने से नहीं चूके। उन्होंने कहा कि भूमि अधिग्रहण पर बहुत भ्रम फैलाए गए, किसानों को भयभीत किया गया। भूमि अधिग्रहण पर प्रधानमंत्री का यह यू टर्न अब विपक्षियों के निशाने पर हैं। देर से तो आए, लेकिन कितने दुरुस्त आए, इसका पता कुछ समय बाद ही चलेगा। बेहतर होता प्रधानमंत्री संसद सत्र के दौरान ही किसानों के हित को समझते और फैसला लेते। जो बातें वे मन की बात में करते है, उसे संसद सत्र में करते तो उसकी महत्ता अलग होती। प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने कई नए प्रयोग किए, मन की बात भी उनमें से एक है। वर्तमान राजनीति में संवादहीनता की जो स्थिति बन गई थी, उससे लोकतंत्र का नुकसान हो रहा था। संसद के विगत सत्रों में जिस तरह व्यवधान उपस्थित हुआ और अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों को पार्श्व में धकेलते हुए संसद का अमूल्य समय नष्ट किया गया, उसमें ज्यादा दोष विपक्ष पर मढ़ा गया। पर प्रधानमंत्री ने भी ऐसी कोई खास कोशिश नहीं की कि वे संसद में लगातार उपस्थित रहें और चर्चा का माहौल बनाएं। उन्हें अकेले बैठकर अपने मन की कहना शायद अधिक आसान लगता है। इस बार मन की बात का संयोग रक्षा बंधन और ओणम के साथ बना तो देश की जनता को लगे हाथों इन पर्वों पर शुभकामनाएं मिल गई। १९६५ के युद्ध की विजय की वर्षगांठ थी, तो सभी संबंधितों को प्रधानमंत्री ने नमन किया। लेकिन समान रैंक, समान पेंशन के लिए आंदोलन कर रहे पूर्व सैनिकों को उन्होंने कोई सकारात्मक संदेश नहीं दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि जय जवान, जय किसान हमारे लिए महज नारा नहीं है। लेकिन लगभग पौने दो साल की उनकी सरकार में किसानों और सैन्य जवानों दोनों के साथ जो व्यवहार हुआ है, वह सबके सामने है। जनधन योजना के एक साल पूरे होने पर उसकी उपलब्धियां भी गिना दीं। लेकिन पौने १८ लाख खाते खुलने के बाद भी क्या जनता की आर्थिक स्थिति सुधरी है, इस पर वे शायद ही कुछ बोल पाएं।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 16 सितम्बर से 22 सितम्बर 2015 तक

प्राप्तेष

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।